# भारतीय वाङ्मय

**हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका**

**वर्ष** 9 | **दिसम्बर** 2008 | **अंक** 12

**ये किताबें**

आधा अधूरी पढ़ लो
पूरी की पूरी पढ़ लो
अरे, पटक भी दो!
उछाल दो
फेंक दो
संप्रेषित करो
जो भी चाहो
कुछ भी करो
कुछ भी कहो
जबान तक नहीं लड़ायेंगी
ये किताबें!
प्राणेश्वरी ही हैं
माँ सरीखी ही
तभी तो सब कुछ सह लेती हैं
और आँखों से क्या क्या नहीं कहतीं
ये किताबें!
× × × ×
सचमुच!
प्राणदेय
ज्ञानदेय
संस्कार देय
ये किताबें
ये किताबें
ये किताबें!!

—**रजनीकांत जोशी,** अहमदाबाद

*पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह मैक्सिको और अर्जेन्टिना की राजकीय यात्रा पर गये थे। संसद के दोनों सदनों के समक्ष राष्ट्रपतिजी का भाषण हुआ। उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा। स्पेनी भाषा में जो उस देश की राजभाषा है उसका अनुवाद सभी सांसदों को उपलब्ध करा दिया गया। अंग्रेजी कहीं आड़े नहीं आई, सभी बड़े प्रसन्न थे। अंग्रेजी न उस देश की भाषा थी और न हमारी, बल्कि स्थिति यह है कि वहाँ के लोग अंग्रेजी अधिक समझते भी नहीं थे। हम अपने देश की जनता को जो अंग्रेजी नहीं जानती गुमराह कर सकते हैं। किन्तु हमें दूसरे उन देशों का, जिनकी भाषा अंग्रेजी नहीं है, अंग्रेजी बोलकर अपमान करने का क्या अधिकार है? यदि बोल सकें तो उनकी भाषा में बोलें, अन्यथा अपनी भाषा में बोलें और दुभाषिये के जरिये उनकी भाषा में अनुवाद करा दें।*

## यक्ष-प्रश्न

यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया कि ''इस संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?'' युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, ''नश्वरता जीवन का सत्य है, यह जानते हुए और नित्य ही लोगों की मृत्यु को प्रत्यक्ष देखकर भी मनुष्य स्वयं अमरत्व के भ्रम में जीता है।''

वैश्वक-बाज़ार में उदारीकृत अर्थव्यवस्था के बीच मुम्बई की दलाल स्ट्रीट के संवेदी-सूचकांक 7000 से 14000 पहुँचे और फिर क्रमश: 21000 तक पहुँच गये। हमारी समग्र विकास-दर भी 7 प्रतिशत से 12.5 प्रतिशत तक जा पहुँची। वस्तुत: 'सत्य और भ्रम' के बीच झूलते हुए इन आँकड़ों ने छलाँग लगायी, मैन्युफैक्चरिंग और आउटसोर्सिंग के कारण रोज़गार के अवसर मिले, नौजवान-पीढ़ी के सपने परवान चढ़ने लगे और अचानक एक दिन सब कुछ धराशायी हो गया। वस्तुत: अमेरिकी बाज़ार का सबप्राइम-संकट विश्व-स्तर पर आर्थिक-सुनामी की विभीषिका बनकर उभरा जिसकी चपेट में आने के बाद दुनिया की विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ आज उसी यक्ष-प्रश्न से रू-ब-रू हैं।

इतिहास-क्रम में औद्योगिक-क्रान्ति के बाद से वैसे तो राष्ट्रीय-स्तर पर अलग-अलग देशों ने मंदी की मार झेली है किन्तु विश्वस्तर पर सन् 1929-30 की महामंदी को रेखांकित किया जाता है जिसने दुनिया को आर्थिक और सामाजिक तौर पर झकझोर दिया और दुनिया दक्षिणपंथ और वामपंथ के खेमों में बँट गयी। इस मंदी का प्रभाव कड़ी-दर-कड़ी पड़ता गया और उसने विश्व की समग्र अर्थ-व्यवस्थाओं को अपनी चपेट में ले लिया। 1929 में अमेरिकी स्टॉक-मार्केट ने मंदी को जन्म दिया था और वर्तमान मंदी अमेरिकी सबप्राइम-संकट से उपजी है। अमेरिकी बैंकों और इनवेस्टमेंट-बैंकरों के ज़्यादा मुनाफा बटोरने के लालच में वाशिंगटन-म्युचुअल, लेहमन ब्रदर्स, मेरिलिंच जैसी बड़ी कम्पनियों ने जिस भस्मासुर की सर्जना की उसने उन्हीं को मिटा दिया और बढ़ चला विश्व-बाज़ार की ओर।

वैश्वक-उदारीकरण के बाद शुरू हुई मैन्युफैक्चरिंग और आउटसोर्सिंग की क्रिया-प्रतिक्रिया के बीच मंदी, छँटनी और कटौती का सिलसिला शुरू हो चुका है। इसका असर बाज़ार पर भी पड़ रहा है, आपूर्ति के बावजूद माँग घट चुकी है, कम्पनियाँ उत्पादन बन्द करने को विवश हैं। यद्यपि इस महामंदी से उबरने के लिए सभी सरकारें प्रयत्न कर रही हैं, किन्तु इसका प्रभाव व्यापक है जिससे मुक्त होने में समय लगेगा।

मंदी के इस सत्य ने उस भ्रमजाल को छिन्न-भिन्न कर दिया है जो सेंसेक्स पर छलाँग लगाकर चढ़ता ही जा रहा था। आई-टी के क्षेत्र में धूम मची थी, कम्पनियाँ पैकेज-नियुक्तियाँ दे रही थीं, निवेशक बाज़ार में पैसा लगा रहे थे, मगर मंदी के आघात से स्वप्न-भंग हुआ, हताशा और निराशा से आक्रान्त हो गया हमारी प्रगति और विकास का सूचकांक। बाज़ार की मंदी ने हमें 'सत्य' के सामने ला खड़ा किया है। अत: निराश

*शेष पृष्ठ 2 पर*

*पृष्ठ 1 का शेष*

होने के बजाय हम संकल्प लेकर क्रमश: प्रगति करें, सत्य और भ्रम के अन्तर को समझते हुए अपनी दिशा निश्चित करें।

युवा वर्ग, जो केवल बाज़ार में बूम हो रहे तकनीकी पाठ्यक्रमों में अवसर तलाशते हैं, उनके लिए भी यह मंदी एक सबक है। कई बार यह बूम अल्पकालिक सिद्ध होता है, इसलिए दूसरे सुरक्षित क्षेत्रों में भी विशेषज्ञता एवं कौशल अर्जन का प्रयत्न करना चाहिए। भाषा-ज्ञान, कलात्मक-कौशल, स्वास्थ्य-सेवा, प्रबन्धन, प्रशासन, सैन्य-सेवा, बाज़ार-नियामक विधि-विशेषज्ञता आदि सैकड़ों क्षेत्र हैं जिनमें पर्याप्त अवसर हैं। सुरक्षित क्षेत्र की सेवाएँ मानव-जीवन की अनिवार्यता से जुड़ी हैं, जिनकी माँग हमेशा रहेगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि इस महामंदी से सबक लेकर हम अपने अर्थतंत्र, उद्योग-तंत्र, बाज़ार-तंत्र और भविष्य की संरचना करें, आकाश अनंत है और सम्भावनाएँ अपार.....।

## सर्वेक्षण

● **राष्ट्रवादी :** पिछले दिनों गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया जाना एक सुखद आश्चर्य था। हमारी संस्कृति ने अपनी भौगोलिक परिधि में 'सप्तसिन्धु' की रचना की है और हर नदी को सांस्कृतिक महत्त्व प्रदान किया है। गंगा की तरह यमुना, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु, सरस्वती, कावेरी आदि सभी नदियाँ हमारी सभ्यता और संस्कृति की अन्तर्धारा हैं। इन नदियों की रुग्णता और प्रदूषित जलधारा हमारे सामाजिक कुलाचार के दुराचार बन जाने का प्रतीक है। अत: केवल घोषणा करके, शंख फूँकने और उत्सव मनाने की जगह हम आत्मालोचन करें, आत्मशुद्धि करें तभी दूर कर सकेंगे गंगा का प्रदूषण अन्यथा इस घोषणा की गूँज भी सुनायी न पड़ेगी।

● **आतंक के नये चेहरे :** पिछले दिनों हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार ने आतंक का एक नया मुहावरा गढ़ा, दुनिया में अब तक किसी धर्म-विशेष के साथ आतंक को नहीं जोड़ा गया लेकिन हमने कर दिखाया। इसी के समानांतर दक्षिणी मुम्बई के कई स्थानों पर सिलसिलेवार आत्मघाती हमले होते हैं, इस हमले में विस्फोट के अलावी वीटी स्टेशन, होटल और बाजारों में फायरिंग करके निर्दोष नागरिकों की हत्या की गयी। किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि लगातार आतंक की विभीषिका झेलते हुए भी हमारी सरकार और संसद आतंक से लड़ने की ठोस-योजना नहीं बना पायी है। इस निर्णय-दुर्बल प्रवृत्ति के कारण पता नहीं कितने विस्फोट और होंगे, कितनी जानें और जायेंगी.... ?

● **अभिनन्दन :** माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय द्वारा काशी में आयोजित बाबूराव विष्णु पराड़कर सपादशती समारोह में वयोवृद्ध वरिष्ठ पत्रकार श्री पारसनाथ सिंह को उनकी आजीवन सेवा के लिए सम्मानित किया गया। श्री पारसनाथ सिंह ने पराड़करजी के ही दिशा-निर्देश में रहकर कार्य किया है और यह संयोग ही है कि स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी द्वारा आरम्भ किये गये 'भारतीय वाङ्मय' को श्री पारसनाथ सिंह का दिशा-निर्देश शुरू से ही मिलता रहा है, कहना न होगा कि वे वाङ्मय-परिवार के वरिष्ठ सदस्य हैं। श्री सिंह के इस प्रतिष्ठा-सम्मान से गौरवान्वित 'भारतीय वाङ्मय' द्वारा अपने वरिष्ठ दिशा-निर्देशक श्री पारसनाथ सिंह का अभिनन्दन....!

**—परागकुमार मोदी**

### अपने-अपने ढंग

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर अपनी रचना प्रक्रिया को काव्य-प्रसव कहते थे। वे कविता की रचना गुनगुनाते हुए करते थे, इसे मधुर स्वर में गाते और घूमते रहते। इस दौरान कोई और इसे कागज पर उतारता रहता।

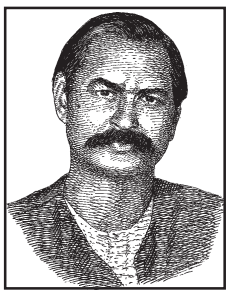

### धूमिल का मूल्यांकन

प्रख्यात जनवादी कवि सुदामा पाण्डेय धूमिल की 72वीं जयन्ती उनके गाँव खेवली में बड़ी सादगी किन्तु क्रान्तिकारी ढंग से मनायी गयी। देशभर से आये साहित्यकारों व संस्कृति कर्मियों ने धूमिल को याद करते हुए कहा कि उनका सही मूल्यांकन नहीं हुआ। उनकी कविताओं में जनता की आशा-निराशा और संघर्ष जिस रूप में आया है उस दौर के कवियों में कम दिखता है।

जनसंस्कृति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष और प्रसिद्ध आलोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि धूमिल की कविता का व्यवस्थित विवेचन नहीं हुआ। उन्होंने कविता की भाषा के साथ उसके चरित्र को भी बदला। धूमिल भारतीय लोकतंत्र के सबसे बड़े आलोचक हैं। गाँव की भाषा में उन्होंने बड़ी कविता लिखीं। वामपंथ के चरित्र को बदलने की उम्मीद में धूमिल ने कविताएँ लिखीं। डॉ० पाण्डेय ने धूमिल के साहसी व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि उस दौर में जब लोग नक्सलबाड़ी का नाम लेने में डरते थे धूमिल ने नक्सल बाड़ी और कविता श्रीकाकुलम नाम से कविताएँ लिखीं। इस अवसर पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कवि और वरिष्ठ पत्रकार वीरेन डंगवाल ने कहा कि धूमिल हमारी पीढ़ी के शिक्षक की भूमिका में थे। उन्होंने भारतीय प्रजातंत्र के पाखण्ड को एक्सपोज किया।

हिन्दी के जाने-माने कवि, साहित्य अकादमी सम्मान से नवाजे जा चुके वरिष्ठ पत्रकार मंगलेश डबराल ने धूमिल के पुश्तैनी घर के सामने खड़े होकर कवि को याद करते हुए कहा कि धूमिल ने उस दौर में वह किया जो बड़े-बड़े और नामी कवि नहीं कर पा रहे थे। धूमिल ने मेहनतकश और संघर्ष करने वाली जनता की बात की। जीभ और जाँघों के बीच के चालू भूगोल से अलग उन्होंने रोटी की बात की, मोचीराम की बात की। श्री डबराल ने कहा कि आजादी के बाद नेहरू युग से जनता का मोहभंग, संसदीय लोकतंत्र से मोहभंग धूमिल की कविता में साफ दिखता है। अपने यहाँ संसद तेली की घानी है, जिसमें आधा तेल आधा पानी है, यह कहना धूमिल के ही बूते की बात थी। धूमिल की जयंती पर आचार्य पंकज द्विवेदी जी ने कहा कि धूमिल उत्तरपंथी थे क्योंकि उन्होंने हमेशा अपनी कविताओं से उत्तर दिया।

# बाबूराव विष्णु पराड़कर सपादशती ( संगोष्ठी )

**सम्मान : श्री पारसनाथ सिंह** (वरिष्ठ पत्रकार)

वाराणसी। आजादी के आन्दोलन में अखबार को बाबूराव विष्णु पराड़कर ने एक तलवार की तरह उपयोग किया। उनकी पत्रकारिता ही क्रांतिकारिता थी। उनके युग में पत्रकारिता एक मिशन हुआ कता था। समय के साथ पत्रकारिता काफी बदल चुकी है। मिशन से प्रोफेशन बनी पत्रकारिता अब वहाँ पहुँच गई है जहाँ मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। ऐसे में पराड़कर युग से मौजूदा पत्रकारिता की तुलना करके कोसने के बजाय इसके लिए गम्भीरता से सोचने की जरूरत है। साहित्य और पत्रकारिता जगत के लोगों को मिलकर यह प्रयास करना होगा कि पत्रकारिता फिर से अपने मूल उद्देश्य से जुड़ सके।

उक्त विचार रविवार, दिनांक 16 नवम्बर 2008 को नागरी नाटक मण्डली में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल की ओर से पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर के 125वें जन्मवर्ष पर आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। संगोष्ठी का विषय था 'पराड़कर युग और आज की पत्रकारिता'।

जानेमाने आलोचक व समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि मौजूदा पत्रकारिता कठिन दौर से गुजर रही है। इसके उत्थान के लिए गम्भीरता से प्रयास करने होंगे। अब की पत्रकारिता स्थानीयता खो रही है। सिर्फ दिल्ली केन्द्रित अखबार निकाले जा रहे हैं।

मुख्य वक्ता व वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी ने कहा कि पराड़कर युग और आज की पत्रकारिता के बीच सेतु बनाने का प्रयास भी विफल होगा क्योंकि परिस्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं। मौजूदा पत्रकारिता में मूल्य बचे ही नहीं हैं। अब पत्रकारिता को उबारने का वक्त आ गया है जिसके लिए सभी को प्रयास करना होगा। विषय प्रवर्तन करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० अच्युतानन्द मिश्र ने कहा कि नई पीढ़ी के पत्रकार सकारात्मक सोच के साथ लेखन करें। वरिष्ठ पत्रकार पराड़करजी के सहयोगी **पारसनाथ सिंह** ने कहा कि पराड़कर जी ऐसे सम्पादक थे जो जनता को और परिस्थिति को ध्यान में रखकर अखबार निकाला करते थे। वह जितने श्रेष्ठ पत्रकार थे उतने ही मर्मज्ञ साहित्यकार भी थे। उन्होंने तमाम शब्दों का सृजन किया। वह उन्हीं शब्दों के प्रयोग को लेखन में करने के पक्षधर थे जिसे जनता स्वीकार करे। साफ कहते थे जो शब्द समझ में न आए, जो खबर समझ में न आए उसे लिखना ही नहीं चाहिए। अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र ने कहा कि पराड़कर युग समर्पण काल था। पत्रकार को स्वतंत्रता थी कि वह लोकहित व समाज हित के लिए लेखनी का प्रयोग करे। आज पत्रकारिता अर्थ प्रधान हो चुकी है जबकि पहले उद्देश्य प्रधान हुआ करती थी। साहित्यकार मनु शर्मा ने कहा कि पराड़कर जी कलम से मुखर और वाणी से मौन रहने वाले तपस्वी थे। संगोष्ठी में सप्रे संग्रहालय के प्रो० योगेश्वर, रत्नाकर पाण्डेय, यमुनाप्रसाद गुप्त, सांसद डॉ० राजेश मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र पाठक, कवि बुद्धिनाथ मिश्र, प्रो० सुरेन्द्र प्रताप, डॉ० अर्जुन तिवारी आदि ने विचार व्यक्त किये।

**संगोष्ठी में पराड़कर जी के सहयोगी रहे वरिष्ठ पत्रकार एवं सम्पादक 93 वर्षीय श्री पारसनाथ सिंह को स्मृति चिह्न व अंगवस्त्रम् भेंटकर सम्मानित किया गया।**

इस अवसर पर सप्रे संग्रहालय की ओर से पुरानी पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी लगाई गई।

## सम्मान पत्र

वरिष्ठ सम्पादक

**पत्रकार श्री पारसनाथ सिंह**

परम श्रद्धेय पण्डित बाबूराव विष्णु पराड़कर के अनन्य सहयोगी वरिष्ठ सम्पादक-पत्रकार **श्री पारसनाथ सिंह** का सम्पूर्ण जीवन पत्रकारिता को समर्पित रहा है।

लगभग पाँच दशकों के सक्रिय पत्रकारिता जीवन में **श्री सिंह** ने सम्मानित पत्रों 'आर्यावर्त', 'सन्मार्ग', 'आज' तथा 'प्रदीप' में पत्रकार-सम्पादक के रूप में विशिष्ट अवदान किया। पत्रकारिता की अंतर्वस्तु, कलेवर, भाषा और राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पत्रकारिता में (विशेष रूप से संगीत के क्षेत्र में) आपका योगदान विशेष रूप से स्मरणीय है।

पराड़कर युग की पत्रकारिता के शलाका पुरुष **श्री पारसनाथ सिंह** की लेखनी ने पिछले पाँच दशकों में पत्रकारिता के उच्च मानदण्ड स्थापित किये हैं। विशिष्ट कालखण्ड के शीर्ष यशस्वी पत्रकारों यथा पराड़करजी, गर्दे जी, खाडिलकर जी, गंगाशंकर मिश्र, दिनेश दत्त झा से आपके घनिष्ठ रचनात्मक सम्बन्ध रहे। पारसनाथजी की लेखनी जीवन के नवें दशक में आज भी गतिशील है और पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखण्ड जैसे क्षेत्रों में 'आज' के माध्यम से पत्रकारिता की मशाल को आगे बढ़ाने का श्रेय जिन कतिपय पत्रकारों को है उनमें **श्री पारसनाथ सिंह** का नाम अग्रणी है।

स्वर्गीय बाबूराव विष्णु पराड़कर की 125वीं जयन्ती के अवसर पर पराड़करजी की कार्यस्थली वाराणसी में **माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल** द्वारा आयोजित **बाबूराव विष्णु पराड़कर स्मृति प्रसंग ( 16 नवम्बर 2008 )** के अवसर पर पत्रकारिता को समर्पित सम्माननीय **श्री पारसनाथ सिंह** का सम्मान करते हुए हम सभी गौरवान्वित हैं। हम उनके दीर्घ और यशस्वी जीवन की कामना करते हैं।

**अच्युतानंद मिश्र**

कुलपति

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय

भोपाल

( *मानपत्र वाराणसी में समर्पित*)

# बिकने वाला लेखन

— एस० शंकर

बहुत पहले प्रसिद्ध हिन्दी लेखक नरेन्द्र कोहली ने खुशवंत सिंह की कहानी का अनुवाद कर किसी हिन्दी पत्रिका को भेजा था। उसे सम्पादक ने यह कहकर वापस लौटा दिया कि ऐसी निम्नस्तरीय रचनाएँ वह नहीं छापते। दरअसल अंग्रेजी के साथ सत्ता और वैभव का जो दावा व आकर्षण बना हुआ है उससे भारत के अंग्रेजी लेखकों की वास्तविकता छिपी रह जाती है, किन्तु सच यही है कि जैसी चीजें हमारे अधिकांश अंग्रेजी लेखक लिख रहे हैं वे भारतवासियों के लिए नहीं, विदेशियों के लिए लिखी जाती हैं। उन्हें विदेशियों द्वारा जो स्वीकृति मिलती है वह भारत के प्रति एक विचित्र, विकृत किस्म की धारणा की पुष्टि करने के लिए मिलती है। हाल ही में ब्रिटेन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बुकर पुरस्कार अपने पहले ही उपन्यास 'द व्हाइट टाइगर' के लिए अरविंद अडिगा को मिला है। लगभग एक लाख डालर का पुरस्कार उन्हें एक हत्यारे नौकर की जुबानी ऐसी कथा लिखने पर मिला जिसने निर्णायकों को प्रभावित किया।

निर्णायक मंडल के अध्यक्ष माइकल पोर्टिलो के अनुसार यह उपन्यास पढ़कर उनकी कई धारणाएँ बदल गईं और वे जान सके कि 'असली भारत क्या है'। आइए, इस असली भारत का सत्य देखें। आरम्भ में ही उपन्यास का नायक बलराम कहता है, ''हमारे देश में कहानी शुरू करने से पहले किसी न किसी भगवान की गुदा चूमने की परम्परा है। लेकिन किस भगवान की गुदा? विकल्प बहुत हैं। मुसलमानों का एक ही भगवान है। ईसाइयों के तीन हैं। और हम हिन्दुओं के तीन करोड़ साठ लाख भगवान हैं तो कुल हो गई तीन करोड़ साठ लाख चार गुदाएँ चुनने के लिए।'' इस प्रकार मंगलाचरण, गणपति वंदना, सरस्वती वंदना के बजाय किसी भगवान की गुदा चूमने को भारतीय परम्परा बताया जा रहा है। ऐसे आरम्भ के साथ कहानियों को भारतीय भाषा की कौन स्तरीय पत्रिका प्रकाशित करेगी?

हमारे अंग्रेजी लेखक पुरस्कारों के लालच में विदेशियों को एक विकृत किस्म का भारत बेचते हैं। जिन भारतीय अंग्रेजी-लेखक-लेखिकाओं को हाल के वर्षों में विदेशी पुरस्कार आदि मिले हैं, उनसे भ्रम नहीं पालना चाहिए। उनमें एजेंटों की लाबिंग की भूमिका तो रहती ही है, पर मुख्य बात है कि बहुतेरे अंग्रेजी लेखक विदेशियों को लुभाने तथा उनकी अहंकार भावना को तुष्ट करने के लिए एक तरह का फार्मूला लेखन करते हैं। वे अपनी रचनाओं में वैसे चौंकाने वाले विवरण देते हैं जो किसी भारतीय पाठक के लिए होते ही नहीं। ये मुख्यत: पारितोषिक देने वाले विदेशी महानुभावों को फँसाने के लिए होते हैं। हमारे अंग्रेजी लेखकों की इस प्रवृत्ति का एम० प्रभा ने अपनी चर्चित पुस्तक 'द वैफल आफ द टौफ्स : ए सोशियो-कल्चरल क्रिटिक आफ इण्डियन राइटिंग इन इंग्लिश' में सूक्ष्म विश्लेषण किया है। उनके अनुसार भारत में अंग्रेजी लेखन एक छोटे से चालबाज वर्ग की आपसी गतिविधि व शुद्ध व्यवसाय है। इस लेखन में मौलिकता या रचनात्मकता नहीं है और उसमें जानबूझकर बिकने लायक सामग्री भरी जाती है। टाइम मैग्जीन में अरविंद अडिगा को बुकर पुरस्कार मिलने पर दो पन्नों की रिपोर्ट छपी है। उसमें पुस्तक की साहित्यिक विशेषता के बारे में इसके अलावा कुछ नहीं कि वह भारत की असल तस्वीर पेश करती है कि भारत की गरीबी की प्रकृति क्या है, कि भारत की उन्नति की बातें कितनी ऊपरी हैं और किस तरह अरविंद अडिगा के एजेंट ने पुरस्कार दिलवाकर अपनी योग्यता दिखा दी। यह रिपोर्ट भी इस पुस्तक की मुख्यत: व्यावसायिक सफलता बताती है, साहित्यिक नहीं। कथ्य और शैली पर इतना ही कि यह एक हत्यारे नौकर की सफलता की कहानी है। क्या यही असली भारत है?

भारत में आज भी अंग्रेजी एक-दो प्रतिशत उच्च वर्गीय लोगों की भाषा है। आत्माभिव्यक्ति और चिंतन की भाषा के रूप में अंग्रेजी बोलने वाले यहाँ आज भी नगण्य हैं। यह अकारण नहीं कि विक्रम सेठ, सलमान रुश्दी, अमिताभ घोष, फारूख ढोंढी, झुम्पा लाहिड़ी आदि लगभग सभी लेखक इंग्लैण्ड या अमेरिका में ही रहते भी हैं। जो अंग्रेजी लेखक भारत में रहते हैं उनकी भी नजर पश्चिमी संवेदनाओं पर ही रहती है। दूसरे शब्दों में भारतीय समाज या भारतीय पाठकों के लिए वे नहीं लिखते? इसीलिए यहाँ अंग्रेजी लेखन में विविधता या गुणवत्ता नहीं है। मीडिया प्रचार, पुरस्कार और रायल्टी की ऊँची रकम से भ्रम हो जाता है, पर भारतीय अंग्रेजी लेखन भारतीयों के लिए नहीं है। यहाँ तो अंग्रेजी एक अवांछित दबाव से चल रही है। इसीलिए अधिकांश अंग्रेजी लेखक लिखते विदेशियों के लिए ही हैं। किस उद्देश्य से, यह वे जानें. किन्तु कला और साहित्य की कसौटी से वह स्तरीय लेखन नहीं है। उसे भारतीय लेखन कह कर हमें अपने आपको गिराना नहीं चाहिए।

### पब्लिशिंग में जाने के लिए क्या करूँ ?

पब्लिशिंग उन लोगों के लिए सही प्रोफेशन है जो पुस्तकें पढ़ना पसन्द करते हैं। किसी अच्छे पब्लिशिंग हाउस में नौकरी करने से अच्छी किताबों को खरीदने की ताकत और विकल्प दोनों मिल सकते हैं। किसी अच्छी पब्लिशिंग कम्पनी के सम्पादकीय विभाग में भी जॉब ले सकते हैं। वहाँ कार्य में लेखकों की पहचान तथा उनकी मैन्युस्क्रिप्ट की कमीशनिंग, प्रिंटर के लिए मैन्युस्क्रिप्ट की टाइप स्क्रिप्ट या डिस्क तैयार करना, लेखक के साथ लायजनिंग जैसे कार्य करने पड़ते हैं।

इस क्षेत्र में जाने के लिए कोई विशेष क्वालिफिकेशन की जरूरत नहीं पड़ती। कार्य पर सारी ट्रेनिंग हो जाती है वह भी अपने अनुभव के साथ। आप ग्रेजुएशन के बाद सीधे बुक पब्लिशिंग में जा सकते हैं एडिटोरियल डिपार्टमेन्ट में असिस्टेंट के रूप में। इस पोजीशन के लिए सेलेक्शन आमतौर पर एक साधारण लिखित परीक्षा तथा व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर होता है जिसमें प्रत्याशी की भाषा और लिखे गए शब्दों के अतिरिक्त उसकी जागरूकता और रुचि की परीक्षा की जाती है। आमतौर पर इस क्षेत्र में प्रवेश के लिए न्यूनतम अपेक्षा किसी विषय में बी०ए० डिग्री है वैसे ज्यादातर पब्लिशिंग कम्पनियाँ ऐसे छात्रों को लेना पसन्द करती हैं जिन्हें अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा का ज्ञान हो। आर्ट, टेक्निकल या एजुकेशन बुक्स जैसी स्पेशलिस्ट पब्लिशिंग में प्रवेश के लिए न्यूनतम अपेक्षा सम्बद्ध विषय में यूनिवर्सिटी डिग्री है।

अब पब्लिशिंग में कुछ कोर्स भी मौजूद हैं। ये पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स हैं जिनमें किसी विषय में एक बेसिक डिग्री की जरूरत होती कुछ पब्लिशिंग हाउस शार्ट-टर्म कोर्स भी स्पॉन्सर करते हैं यद्यपि यह क्षेत्र में अनुभव रखने वाले प्रोफेशनल्स के लिए तैयार किए गए होते हैं।

किताबों में अपनी रुचि के साथ आप लाइब्रेरी साइंस में बी०ए० या एम०ए० करने के बाद लाइब्रेरियन बन सकते हैं। क्वालिफाइड लाइब्रेरियन और इनफोर्मेशन स्पेशलिस्ट की आजकल ज्यादा मांग है। बैचलर ऑफ लाइब्रेरी साइंस किसी विषय में ग्रेजुएशन के बाद 1 वर्ष, का कोर्स है और जबकि इस कोर्स के बाद मास्टर ऑफ लाइब्रेरी साइंस एक वर्ष का कोर्स होता है। आप इन कोर्सेज को डिस्टेंस लर्निंग द्वारा भी कर सकते हैं।

### अपने-अपने ढंग

फ्रांसीसी साहित्यकार विक्टर ह्यूगो बैठकर नहीं लिख पाते थे। खड़े-खड़े लिखने के लिए उन्होंने अपने कंधे के बराबर ऊँचाई की मेज बनवा रखी थी। वे दीन-दुनिया से बेखबर होकर 15-15 घंटे तक खड़े रहकर लिखते रहते थे।

# मेरे नगपति, मेरे विशाल साकार दिव्य गौरव विराट!

शताब्द कृति-पुरुष राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' को भारतीय वाङ्मय की श्रद्धांजलि

रामधारी सिंह दिनकर अत्यन्त लोकप्रिय कवि थे। लोकप्रियता और प्रसिद्धि उनको अपने रचना-काल की आरम्भिक अवस्था और अपने जीवन की एकदम युवावस्था में ही मिल गई थी। उन्होंने खुद लिखा है, ''बात यों हुई कि जब मैं सम्मेलन (बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, 1933) देखने भागलपुर पहुँचा, तो मुझे पता चला कि दूसरे दिन जो कवि-सम्मेलन होने वाला है, उसके लिए कविता का विषय 'हिमालय' रखा गया है। मैं वहाँ लालूचक मोहल्ले में एक मित्र के घर ठहरा था। स्थान-संकोच के कारण सोने की जगह मुझे बरामदे में मिली हुई थी, वह भी थोड़ी नसखट थी। उस पर जगे-जगे मैंने रात भर में पूरी कविता लिख डाली। दूसरे दिन सम्मेलन में मैंने जब उसका पाठ किया, तब जायसवालजी (काशी प्रसाद जायसवाल) समेत सारी सभा झूम उठी और उतनी लम्बी कविता को तीन-चार बार पढ़वाकर सभा ने मुझे भारी प्रोत्साहन और गौरव प्रदान किया। जायसवालजी के साथ मेरा सम्पर्क उसी समय से आरम्भ हुआ और वे जब तक जीवित रहे, उनके सहज स्नेह से मेरा आन्तरिक व्यक्तित्व बराबर सिक्त और प्रफुल्लित होता रहा। (संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, पृ० 2)''

इस प्रसंग में एक अत्यन्त रोचक घटना याद आ रही है, जो मैंने अपने बुजुर्ग लेखकों से सुनी है। मैं कह नहीं सकता कि यह घटना है या किंवदंती। सन् 1934 में बिहार में एक भयानक भूकम्प आया। मुंगेर उसका मुख्य केन्द्र था। उसके आस-पास भागलपुर तक तो उसका प्रभाव था ही, और भी दूर-दूर तक धरती डोली थी। भूकम्प के बाद मुंगेर में एक साहित्य-समारोह में कवि सम्मेलन आयोजित था। भागलपुर के सम्मेलन में तो यों ही पहुँचे थे, उसे देखने और समस्यापूर्ति की तर्ज पर उन्होंने 'हिमालय' कविता लिखी थी। लेकिन 'हिमालय' का वहाँ पाठ करने के बाद तो वे हर जगह बुलाए जाने लगे। तो मुंगेर के कवि सम्मेलन में भी बुलाए गए। उस समय मुंगेर उनका गृह जिला था। वहाँ जब वह कविता सुनाने उठे, तो प्रशंसा लूटने के लिए उन्होंने हिमालय सुनाना शुरू किया। अभी कुछ ही पंक्तियाँ उन्होंने सुनाई थी कि श्रोताओं ने हल्ला मचाना शुरू किया—बन्द कीजिए, बन्द कीजिए। दिनकरजी अवाक थे। क्या बात है? फिर लोगों ने कहा, एक बार आपने ऐसी कविता सुनाई, तो ऐसा भूकम्प आया, फिर भूकम्प कराने का इरादा है क्या? 'हिमालय' में कवि ने कहा है, *कह दे शंकर से, आज करें/वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार* और फिर आगे—*ले अंगड़ाई उठ हिले धरा, कर निज विराट स्वर में निनाद*। सम्भव है, लोगों ने समझा हो कि दिनकर के आह्वान पर शंकर ने प्रलय नृत्य कर ही दिया और धरा हिल उठी, भूकम्प आ गया। अब फिर नहीं। कविता का यह प्रभाव, अंधविश्वास के रूप में ही सही, देखकर दिनकर प्रसन्न हुए। उन्होंने दूसरी कविता सुनाई। तो *हिमालय* और उसके माध्यम से कवि की प्रसिद्धि और लोकप्रियता का यह दूसरा सुबूत है।

दिनकर को अपनी लोकप्रियता का एहसास रहा है, लेकिन वह लगातार श्रेष्ठता के लिए भी प्रयत्नशील रहे। हालांकि उन दिनों वह लोकप्रियता में ही झूमते थे, जो स्वाभाविक था। वह कहते हैं, ''उन दिनों कला और काव्य की प्रक्रिया तथा उद्देश्य के विषय में मुझे बहुत थोड़ा ज्ञान था, इसलिए लोग जब मुझ पर कलाहीनता का आक्षेप करते, तब इस आक्षेप को मैं ठीक से समझ नहीं पाता था, और समझता भी तो जैसा कह चुका हूँ, उसे दूर करने की धीरता का मुझमें अभाव था। इतना नहीं, सभी कवियों की भाँति मुझमें भी अपनी कविताओं के प्रति कोई शंका या सन्देह नहीं था।'' श्रोता से जो वाहवाही मिल रही थी, उस पर कवि मजे से तैर रहा था। तुलसीदासजी ने लिखा है, *निज कवित्त केहि लागि न नीका* यह कवियों के लिए आम बात है।

दिनकर के समकालीन और मौज-मस्ती के कवित्रयी दिनकर, बच्चन और भगवतीचरण वर्मा में से एक भगवतीचरण वर्मा ने कहा है, *निज कवित्त मोहिं लागहीं नीका,* तो दिनकर ने भी आगे चलकर लिखा, 'ज्यों-ज्यों मेरी कविताएँ जन-समुदाय को आन्दोलित करती गईं, मेरा यह आत्मविश्वास जोर पकड़ता गया कि मैं समय का पुत्र हूँ और मेरा सबसे बड़ा काम यह है कि मैं अपने युग के क्रोध और आक्रोश को अधीरता और बेचैनियों से सफलता के साथ छन्द के बन्धन में बाँधकर सबके सामने उपस्थित कर दूँ।'

**— खगेन्द्र ठाकुर**

(प्रकाशन विभाग से प्रकाशित पुस्तक '*रामधारी सिंह दिनकर : व्यक्तित्व और कृतित्व से*')

## गुलेरी को पढ़ना क्यों जरूरी है

### 125वाँ जयन्ती वर्ष

सात जुलाई 1883 को पुरानी बस्ती, जयपुर में जन्मे चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का इस समय 125वाँ जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है। एक कहानीकार के रूप में गुलेरीजी अविस्मरणीय हैं और जिस कहानी ने उन्हें अविस्मरणीय बनाया, वह थी *सरस्वती* (जून 1915) में प्रकाशित कहानी 'उसने कहा था'। इसे हिन्दी की पहली कहानियों में शुमार किया जाता है। गुलेरीजी के रचनाकर्म के बारे में लोगों की मान्यता है कि उन्होंने केवल तीन ही कहानियाँ लिखी हैं, 'उसने कहा था', 'दुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा'। किन्तु बाद में हुए कई शोधों से उनकी कुछ और कहानियों के बारे में पता चला। मनोहर लाल ने गुलेरीजी के ऊपर शोध करके यह निष्कर्ष निकाला कि इन तीन कहानियों के अलावा भी गुलेरीजी की तीन और कहानियाँ 'घंटाघर', 'धर्मपरायण रीछ' और 'हीरे का हीरा' हैं। इनमें से 'हीरे का हीरा' अधूरी थी, जिसे बाद में हिमाचल प्रदेश के शीर्षस्थ कहानीकार सुशील कुमार फुल्ल ने अपनी कल्पनाशीलता, सामर्थ्य और साधना के बल पर पूरा किया। लेकिन इन सबके बीच जिस कहानी ने गुलेरीजी को साहित्यजगत में नाम दिलाया, वह कहानी 'उसने कहा था' ही है। जब हिन्दी की लोक कथावृत्ति पर उर्दू का रहस्य, रोमांच, ऐय्यारी और तिलिस्म का सिक्का जमता जा रहा था, ऐसे समय में गुलेरीजी की यह कहानी आधुनिक कहानी का प्रस्थान बिन्दु है। भले ही इसके पाठ शोधन में और सम्पादन में महावीरप्रसाद द्विवेदी का सहयोग रहा हो, लेकिन इससे गुलेरीजी की योग्यता और कल्पनाशीलता को कमतर नहीं आंका जा सकता। इस नाते मनोहर लाल की बात को मैं अगर थोड़े संशोधन के साथ कहूँ, तो गुलेरीजी ने अनूठे शिल्प तथा उदात्त संवेदना के द्वारा हिन्दी कथा लेखन में ऐसे राजमार्ग की नींव डाली है, जिसे परवर्ती कथाकारों प्रेमचंद, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, सुदर्शन, जयशंकर प्रसाद ने प्रशस्त रूप में आगे बढ़ाया।

हिन्दी के आद्य कथाकारों में गणनीय चंद्रधर शर्मा गुलेरी के कथासंसार को हमने पूरी तरह पा लिया है, विश्वासपूर्वक शायद ही कोई कह सकता है। उनकी और भी रचनाओं के मिलने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इस दिशा में और भी कोशिशों के साथ गुलेरीजी के जन्म का 125वाँ साल जागरूकता और उत्साह के वातावरण में मने, तभी उसकी सार्थकता होगी।

**—गोपाल चतुर्वेदी**

संस्कृत माँ, हिन्दी गृहणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

**—फादर डॉ० कामिल बुल्के**

# अत्र-तत्र-सर्वत्र

### ऑन लाइन स्टोरेज का मतलब इंटरनेट पर फाइलों की सुरक्षा और वह भी नि:शुल्क

ऑनलाइन स्टोरेज उन लोगों के लिए वरदान सिद्ध हो जाता है जिनकी हार्ड डिस्क में ज्यादा स्थान बचा नहीं रह गया है या जो अपनी गोपनीय सूचनाओं को दूसरों की खोजी निगाहों से बचाने के लिए चिन्तित हैं। वह ऐसे लोगों के लिए भी उपयोगी है जो बार-बार होने वाले वायरस के हमले से परेशान हैं और वे भी अपने कम्प्यूटर के क्रैश हो जाने पर सारा डेटा साफ हो जाने की चिन्ता से त्रस्त हैं। फिर वे लोग भी उसे उपयोगी पाएँगे जो आमतौर पर यात्रा करते रहते हैं और वे लोग भी जो अपने दस्तावेजों को कई अन्य लोगों के साथ साझा करना चाहते हैं।

ऑनलाइन स्टोरेज, यानी इंटरनेट पर मिलने वाली एक अदृश्य हार्ड डिस्क, जिसे आप विश्व में किसी भी स्थान से किसी भी समय इस्तेमाल कर सकते हैं। न फाइल घर भूल जाने का झंझट और न महत्त्वपूर्ण डेटा का बैकअप करते रहने की चिरस्थायी चिन्ता।

इस तरह की सेवाएँ दो और तीन श्रेणियों में उपलब्ध हैं। पहली जिसके लिए उपभोक्ता को सालाना या मासिक शुक्ल देना होता है। इनमें सामान्य सेवाओं की तुलना में कुछ अधिक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। दूसरी श्रेणी में वे सेवाएँ आती हैं जो हैं तो मुफ्त लेकिन उनकी वेबसाइटों का प्रयोग करते समय आपको विभिन्न प्रकार के विज्ञापन दिखाए जाते हैं (आखिर कहीं न कहीं से तो इन्हें अपना खर्च निकालना है)। तीसरी श्रेणी में वे सेवाएँ आतीं हैं जो पूरी तरह नि:शुल्क हैं और जिनमें विज्ञापनों जैसे चिड़चिड़ा देने वाले तत्त्व भी नहीं होते।

### इग्नू ने जोड़ा भोजपुरी से नाता

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने भोजपुरी भाषा से नाता जोड़ा है। अगले सत्र वर्ष 2009 से इसे आधार पाठ्यक्रम (फाउंडेशन कोर्स) में शामिल करने की योजना है। इसके लिए देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों से आधार पाठ्यक्रम तैयार कराए जा रहे हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हिन्दी विभाग में रीडर डॉ० विनय कुमार सिंह का कहना है कि हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य के समरूप ही भोजपुरी को भी साहित्य का दर्जा मिलना चाहिए। इससे भोजपुरी भाषा के विकास को काफी बल मिलेगा।

बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश झारखण्ड व अन्य क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों के शिक्षक व विशेषज्ञ भी भोजपुरी में आधार पाठ्यक्रम तैयार करने में जुटे हुए हैं।

### तमिलनाडु के संस्थान को मानद का दर्जा

केन्द्र सरकार ने हाल ही में राजीव गाँधी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ यूथ डेवलपमेंट को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया। संस्थान को यह दर्जा यूजीसी अधिनियम की धारा 3 के तहत दिया गया है। यह संस्थान खेल एवं युवा मामलों के मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान है। फिलहाल इसे पाँच साल के लिए डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया है। हर साल के बाद एक विशेषज्ञ समिति की मदद से यूजीसी इसके कामकाज का आकलन करेगी। इस समिति द्वारा संस्थान के कामकाज, शिक्षण इत्यादि पर जो रिपोर्ट दी जाएगी उसके आधार पर इसे स्थायी तौर पर यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया जा सकता है। यह जानकारी मंत्रालय द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में दी गई।

### छात्रों को राजनीति के लिए प्रेरित करें

भारत के मिसाइलमैन और पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का कहना है कि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद को अपने छात्रों को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वह राजनीति को बतौर कॅरियर चुनें। उन्होंने कहा मैं जबयुवाओं से पूछता हूँ कि क्या वे आईएएस अधिकारी बनना चाहते हैं तो कई छात्र हाथ उठाते हैं। जब मैं पूछता हूँ कि क्या वे इंजीनियर बनना चाहते हैं तो भी कई छात्र हाथ उठाते हैं। अगर मंगल पर जाने के बारे में पूछता हूँ तो सब अपना हाथ उठा देते हैं। लेकिन जब मैं पूछता हूँ कि क्या वे राजनीति में जाना चाहेंगे तो कोई रुचि नहीं दिखाता। कलाम का कहना था कि युवकों को इस क्षेत्र की ओर भी जाना चाहिए।

### इटली की यूनिवर्सिटी में गठजोड़

राममनोहर लोहिया नेशनल लॉ युनिवर्सिटी विशेष रूप से इंटरनेशनल लॉ में शैक्षिक शोध को प्रोत्साहन देने के लिए इटली की नेपल्स युनिवर्सिटी से गठजोड़ करेगी। युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर बलराज चौहान ने हाल ही में कहा, आरएमएलएनयू और यूनिवर्सिटी ऑफ नेपल्स शैक्षिक स्टाफ और शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान कार्यक्रम के लिए एक समझौता करेंगे। इसके तहत दोनों देशों के कानून में जो कुछ विशेषताएँ हैं उनसे छात्रों को अवगत कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से हमारे छात्र और अध्यापक इंटरनेशनल लॉ का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे। युनिवर्सिटी के अधिकारियों के अनुसार, दोनों संस्थाओं के बीच एक सप्ताह के भीतर समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हो जाएँगे। एक बार समझौता हो जाने के बाद युनिवर्सिटी के छात्र और अध्यापक संयुक्त रूप से शोध कार्य कर पाएँगे।

### राजस्थान में एक हजार आईटी ज्ञान केन्द्र

राजस्थान सरकार द्वारा गठित राजस्थान नालेज कारपोरेशन लिमिटेड जनवरी 2009 से प्रदेश में एक हजार आई टी ज्ञान केन्द्र स्थापित करने की योजना लागू करेगा। यह जानकारी देते हुए कारपोरेशन के अध्यक्ष एम०एल० मेहता ने बताया कि इन केन्द्रों के माध्यम से राज्य के युवाओं को डिजिटल ज्ञान आधारित साक्षरता से सूचना प्रौद्योगिकी की दृष्टि से कुशल एवं निपुण बनाया जाएगा।

### उत्तर प्रदेश में साक्षरता को इंटेल का प्रोत्साहन

उत्तर प्रदेश ने चिप बनाने वाली नामी कम्पनी इंटेल के साथ एक गठजोड़ किया है। इसके तहत देश में सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य में कम्प्यूटर साक्षरता को बढ़ाया जाएगा। एक वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी ने बताया कि इंटेल के साथ इस गठजोड़ के माध्यम से पूरे राज्य में तकरीबन पाँच हजार कम्प्यूटर लैब्स स्थापित किए जाएँगे। उन्होंने बताया कि पहले तो इलाहाबाद और लखनऊ जिलों के स्कूलों में कम्प्यूटर लैब्स स्थापित होंगे, उसके बाद अन्य जिलों में भी इस योजना का विस्तार किया जाएगा। इस कदम से ऐसे छात्रों और शिक्षकों को लाभ पहुँचेगा जो सुदूर इलाकों में होने के कारण अभी तक तकनीकी शिक्षा से जुड़ नहीं पाए हैं।

### सऊदी अरब में महिला युनिवर्सिटी

दुनिया की सबसे बड़ी महिला युनिवर्सिटी साऊदी अरब में बनने जा रही है। इसकी आधारशिला सऊदी के शाह अब्दुल्ला खुद रखेंगे। इसका नाम रियाल वूमेन युनिवर्सिटी रखा गया है। उच्च शिक्षा के लिए यह दुनिया की सबसे बड़ी युनिवर्सिटी होगी। योजना के अनुसार इसकी स्थापना का कार्य वर्ष 2010 तक पूरा हो जाएगा। इस युनिवर्सिटी में 13 कॉलेज होंगे और अस्सी लाख वर्ग मीटर में फैली होगी।

### बीजिंग का ट्रैफिक फार्मूला

सड़कों पर वाहनों विशेषकर कारों की भरमार और ट्रैफिक जाम की समस्या का जो हल बीजिंग महानगर पालिका ने निकाला है वह अन्य लोगों, देशों और नगर प्रशासन जैसे जुड़े वर्ग के लिए मॉडल हो सकता है। बीजिंग में इस समय लगभग आठ लाख कारें हैं। महानगर पालिका ने कारों के लिए चीनी राजधानी की सड़कों पर चलने लिए नए मानदण्ड तय कर दिए हैं। अधिकांश लोगों ने इसका स्वागत किया है तथा वे लोग नाराज हैं जो प्रतिदिन कार का उपयोग करते हैं। नए नियमों के अनुसार प्रत्येक सोमवार को उन वाहनों को महानगर की सड़कों पर उतारना

# संस्कृत साहित्य/संस्कृत व्याकरण, रस, अलंकार, साहित्य-शास्त्र तथा समीक्षा की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

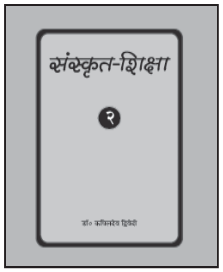


## संस्कृत-शिक्षा (भाग : 1-2-3)

(संस्कृत की प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए)

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**भाग : 1 पृष्ठ :** 48 **सप्तम संस्करण :** 1994
**भाग : 2 पृष्ठ :** 56 **सप्तम संस्करण :** 2009
**भाग : 3 पृष्ठ :** 64 **अष्टम संस्करण :** 2008

संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए गृह कार्य (Desk Work) के रूप में लिखी गई ये पुस्तकें अभ्यास-पुस्तिकाओं के रूप में हैं। इनमें सरल रूप में संस्कृत भाषा में लिखने और बोलने का अभ्यास कराया गया है। संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए ये अत्यन्त उपयोगी पुस्तिकाएँ हैं।

**मूल्य :** अजिल्द : **25.00** **भाग - 1**
अजिल्द : **25.00** ISBN : 978-81-7124-646-5 **भाग - 2**
अजिल्द : **25.00** ISBN : 978-81-7124-647-2 **भाग - 3**

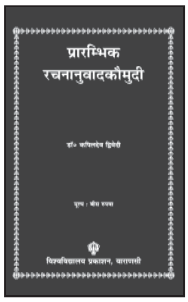


## प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमदी

(हाईस्कूल और मध्यमा के छात्रों के लिए)

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 160 **तीसवाँ संस्करण :** 2008

यह रचनानुवाद-कौमुदी की पद्धति पर लिखी गई प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए संस्कृत-व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है। इसमें केवल 30 अभ्यास, 80 संस्कृत के नियम और 600 शब्दों के द्वारा संस्कृत का ज्ञान कराया गया है। इसके अध्ययन से सामान्य हिन्दी का ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति 3 मास में सरल और शुद्ध संस्कृत लिखना और बोलना सीख सकता है। इसमें हाईस्कूल में निर्धारित सभी शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं। साथ ही मुख्य सन्धियों का पूरा विवरण दिया गया है। इसमें परीक्षा के लिए उपयोगी 20 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध भी दिए गए हैं। पुस्तक की 2 लाख से अधिक प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

**मूल्य :** अजिल्द : **20.00** ISBN : 978-81-7124-629-8

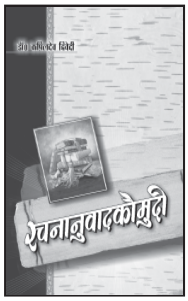


## रचनानुवादकौमुदी

(इण्टरमीडिएट, बी.ए. और शास्त्री के छात्रों के लिए)

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 296 **संशोधित तथा परिवर्द्धित पैंतीसवाँ संस्करण :** 2008

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है। इसमें 200 नियमों एवं 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में संस्कृत व्याकरण के विशेष उपयोगी नियमों की शिक्षा दी गई है, इसके अध्ययन से सामान्य हिन्दी-ज्ञान वाला व्यक्ति भी 3 या 4 मास में सरल संस्कृत लिख और बोल सकता है। इसमें बी०ए० स्तर तक के लिए उपयोगी सभी शब्दरूप और धातुरूप दिए गए हैं, साथ ही संक्षिप्त धातुकोश, प्रत्ययविचार, संधिविचार, सरल संस्कृत में 20 निबन्ध, छन्द-परिचय और पारिभाषिक शब्दों का विवरण दिया गया है। इसकी 2 लाख से अधिक प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

**मूल्य :** अजिल्द : **60.00** ISBN : 978-81-7124-594-9

## प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 456 **सप्तदश संस्करण :** 2007

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है, यह संस्कृत के उच्चस्तरीय ज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमें 300 नियमों और 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में समस्त संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी गई है। इसमें दैनिक प्रयोग के शब्दों का भी संकलन किया गया है।

**मूल्य :** सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-318-5
अजिल्द : **140.00** ISBN : 978-81-7124-584-0

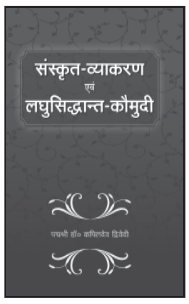


## संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त-कौमुदी

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 492 **सप्तम् संस्करण :** 2008

संस्कृतभाषा के व्याकरण के ज्ञान के लिए यह सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें भूमिका में संस्कृत व्याकरणशास्त्र का विस्तृत इतिहास दिया गया है, सम्पूर्ण लघु-सिद्धान्तकौमुदी हिन्दी अनुवाद और विस्तृत व्याख्या के साथ दी गई है। सिद्धान्तकौमुदी से कारक-प्रकरण व्याख्या सहित दिया गया है। साथ ही ग्रन्थ की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए संक्षिप्त वैदिक व्याकरण, स्वर-सम्बन्धी नियम, वैदिक छन्द-परिचय, संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण और पारिभाषिक शब्दकोश भी दिया गया है। संस्कृत व्याकरण की सरल और वैज्ञानिक व्याख्या के लिए यह ग्रन्थ आदर्श है।

**मूल्य :** अजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-676-2

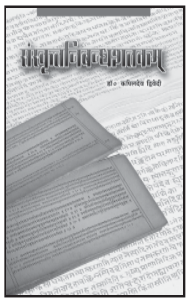

## संस्कृतनिबन्धशतकम्

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 368 **त्रयोदश संस्करण :** 2008

इसमें सरल एवं सुललित भाषा में उच्चस्तरीय परीक्षाओं के लिए उपयुक्त 110 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। इसमें वैदिक एवं शास्त्रीय विषयों पर 10, दार्शनिक विषयों पर 6, काव्यशास्त्रीय 11, साहित्यिक 15, भाषाशास्त्रीय 5, सांस्कृतिक 9, सामाजिक 5, आर्थिक 3, राष्ट्रीय 8, शिक्षाशास्त्रीय 8 एवं विविध विषयों पर 30 निबन्ध दिए गए हैं।

**मूल्य :** अजिल्द : **90.00** ISBN : 978-81-7124-644-1

## अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 404 **द्वितीय संस्करण :** 2008

इसमें अर्थविज्ञान (Semantics) विषय पर भारतीय वैयाकरणों के गहन चिन्तन का विशद विवेचन है। पतंजलि के महाभाष्य और भर्तृहरि के वाक्यपदीय का गहन अनुशीलन है। साथ ही अन्य दार्शनिकों के मन्तव्यों का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें 9

अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का वर्णन है— शब्द और अर्थ का स्वरूप, अर्थ-विकास, अर्थनिर्णय के साधन, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, शब्दशक्ति, पद और पदार्थ, वाक्य और वाक्यार्थ, स्फोटवाद और अर्थविज्ञान।

**मूल्य :** सजिल्द : **400.00** ISBN : 978-81-7124-628-1

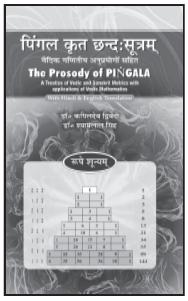


## पिंगल कृत छन्द:सूत्रम्

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, डॉ० श्यामलाल सिंह**

**पृष्ठ :** 346 **प्रथम संस्करण :** 2008

आचार्य पिंगल का 'छन्द:सूत्रम्' ही छन्द-शास्त्र की प्राचीनतम उपलब्ध पुस्तक है।

दसवीं शताब्दी के गणित एवं संस्कृत के आचार्य हलायुध भट्ट की 'मृतसंजीवनी' छन्द:सूत्रम् की सबसे लोकप्रिय एवं प्रामाणिक टीका है जिसका प्रयोग भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 1050 वर्षों से हो रहा है। छन्द:सूत्रम् की कतिपय अन्य टीकाएँ भी हैं, किन्तु मृतसंजीवनी अथवा किसी अन्य टीका का हिन्दी अथवा अंग्रेजी रूपान्तरण नहीं हुआ है। वर्तमान पुस्तक में मृतसंजीवनी को आधार बनाते हुए सभी सूत्रों का शब्दार्थ देने के साथ हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है तथा आवश्यकतानुसार उनकी विवेचना की गई है।

**मूल्य :** सजिल्द : **300.00** ISBN : 978-81-7124-634-2
अजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-635-9

## भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 528 **ग्यारहवाँ संस्करण :** 2008

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसंधानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, अर्थविज्ञान, विश्व की समस्त भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय आर्यभाषाएँ, स्वनिम, पदिम, रूपिम, आर्थिक, स्वनिम-विज्ञान, भाषाशास्त्र का इतिहास एवं लिपि का इतिहास आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है।

**मूल्य :** सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-547-1
अजिल्द : **120.00** ISBN : 978-81-7124-615-1

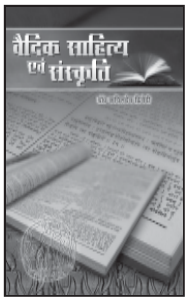


## वैदिक साहित्य एवं संस्कृति

**डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 384 **चतुर्थ संस्करण :** 2008

इसमें 13 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का प्रतिपादन है—वेदों का महत्त्व, वेदों का रचनाकाल, वेद और भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान्, वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद् ग्रन्थ, 6 वेदांग—शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष एवं कल्पसूक्त, वैदिक संस्कृति, भूगोल एवं सामाजिक जीवन, वैदिक अर्थव्यवस्था, वैदिक राजनीतिक अवस्था, वैदिक देवों का स्वरूप, वैदिक यज्ञमीमांसा, वैदिक व्याकरण, स्वरप्रक्रिया, वेदों में विज्ञान के सूक्त, वेदों में काव्यसौन्दर्य और ललित कलाएँ।

**मूल्य :** सजिल्द : **250.00** ISBN : 978-81-7124-642-7
अजिल्द : **140.00** ISBN : 978-81-7124-641-0

## रसों की संख्या

**प्रो० वी० राघवन्**

**पृष्ठ :** 208 **प्रथम संस्करण :** 2007

'दि नम्बर ऑव रसाज़' नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रो० राघवन् की शास्त्र-वैदुषी का निकष माना जाता है। इस ग्रन्थ में प्रो० राघवन् की प्रतिष्ठा से जुड़े पक्ष-विपक्षात्मक विद्वद्विवादों की सांगोपांग समीक्षा तो की ही है, रसों की संख्या पर भी गहन दृष्टि डालते हुए उन्होंने भोज एवं हरिपालादि-अभिमत नये रसों की भी सांगोपांग समीक्षा की है।

**मूल्य :** सजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-518-5

## संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

**डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 576 **द्वितीय संशोधित, परिवर्धित संस्करण :** 2007

राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सचमुच में एक अभिनव इतिहास है। यह संस्कृत साहित्य की पाँच सहस्र से अधिक वर्षों की परम्परा का विशद परिचय तो देता ही है, इस साहित्य की सुदीर्घ विकास यात्रा का उद्भव काल, स्थापना काल, समृद्धिकाल तथा विस्तार काल इन चार कालों के क्रमिक सोपानों में विभाजन के द्वारा विद्वान् लेखक ने हमारी साहित्यिक धरोहर का पुनर्व्यवस्थापन और पुनर्मूल्यांकन भी नये आलोक में यहाँ किया है। संस्कृत के अनेक अज्ञात किन्तु महत्त्वपूर्ण रचनाकारों का परिचय पहली बार इस कृति में समाविष्ट हुआ है, तथा प्रसिद्ध महाकवियों की समीक्षा की गई है।

**मूल्य :** सजिल्द : **400.00** ISBN : 978-81-7124-569-7
अजिल्द : **250.00** ISBN : 978-81-7124-563-5

दीपशिखाटीकासहितः
श्रीमदानन्दवर्धनाचार्यविरचितो

## ध्वन्यालोकः

टीकाकारः **आचार्यचण्डिकाप्रसाद शुक्ल**

**पृष्ठ :** 400 **द्वितीय संस्करण :** 2005

संस्कृत साहित्यशास्त्र में युगप्रवर्तक ग्रन्थ ध्वन्यालोक 'काव्यालोक' तथा 'सहृदयालोक' नाम से भी आचार्यों द्वारा उल्लिखित हुआ है। साहित्यशास्त्र में इस ग्रन्थ का वही स्थान है जो व्याकरणशास्त्र में पाणिनी की अष्टाध्यायी का तथा वेदान्तदर्शन में बादरायण के ब्रह्मसूत्रों का। इस महान् ग्रन्थ में जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, उन्हीं का समर्थन, व्याख्यान एवं अनुसरण अभिनवगुप्त, मम्मट, हेमचन्द्र, विश्वनाथ तथा पण्डितराज जगन्नाथ आदि धुरीण साहित्यमनीषियों ने किया। इस ग्रन्थरत्न ने पूर्वप्रचलित रस-गुण-रीति-अलङ्कार आदि काव्याङ्गों का समुचित मूल्याङ्कन कर काव्य में उनके उचित स्थान की व्यवस्था दी तथा काव्य के वास्तविक सौन्दर्य को परखने की चिरसत्य दृष्टि दी। पण्डितराज जगन्नाथ के शब्दों में—''ध्वनिकृताम-लङ्कारसरणि-व्यवस्थापकत्वात्।'' ध्वन्यालोक में कुल चार उद्योत हैं तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ में कारिका, वृत्ति एवं उदाहरण तीन भाग हैं।

**मूल्य :** अजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-438-6

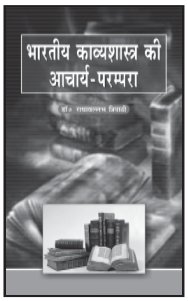


## भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा

**डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 164 **प्रथम संस्करण :** 2007

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय काव्यशास्त्र के प्रस्थानप्रवर्तक आचार्यों पर केन्द्रित है। इसमें ऐतरेय महीदास से लेकर पण्डितराज जगन्नाथ तक ग्यारह आचार्यों के काव्य और कला से सम्बन्धित विचारों का गहरा विमर्श प्रस्तुत करते हुए इनके बीच पारस्परिक अन्त:संवाद, आदान-प्रदान तथा इनके माध्यम से हमारे कलाचिन्तन में उठने वाले शास्त्रार्थ या बहस के अनेक बिन्दुओं पर विद्वान् लेखक ने विचार किया है। श्री त्रिपाठी ने यहाँ भारतीय काव्यचिन्तन की तीन हजार वर्षों की सम्पन्न परम्परा को विशद रूप में उजागर किया है।

**मूल्य :** सजिल्द : **180.00** ISBN : 978-81-7124-568-0

## वक्रोक्तिजीवितम्

**डॉ० दशरथ द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 260 **पंचम संस्करण :** 2007

प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में अद्वितीय काव्यतत्त्वज्ञ हैं आचार्य कुन्तक,जिनकी एकमात्र उपलब्ध किन्तु खण्डित कृति 'वक्रोक्तिजीवित' से संस्कृत काव्यशास्त्र की अमरबेल में एक और अपूर्व अभिनव वक्रोक्तिशाखा की लुनाई की विविध भङ्गी छाया का प्रादुर्भाव हो गया है। ध्वन्यालोककार आनन्दवर्द्धन आदि की भाँति आचार्य कुन्तक ने भी इसे कारिका और वृत्तिरूप में लिखा है।

**मूल्य :** अजिल्द : **120.00** ISBN : 978-81-7124-571-0

## रसाभिव्यक्ति

रीति-गुण, वक्रोक्ति, आचार्य अभिनव गुप्त निरूपित रस प्रक्रिया

**डॉ० दशरथ द्विवेदी**

**पृष्ठ :** 164 **प्रथम संस्करण :** 2001

रस तत्त्व की सम्यक् व्याख्या आचार्य अभिनवगुप्त निरूपित इस प्रक्रिया में पूर्ण होती है। अभिनवगुप्त की प्रखर प्रतिभा से सभी विद्वान परिचित हैं। रसाभिव्यक्ति में तीन शोध-पत्रों रीति-गुण, वक्रोक्ति और अभिनवगुप्त निरूपित रसप्रक्रिया का समावेश किया गया है। अन्त में प्रकृतोपयोगी दो महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट जोड़े गये हैं। प्रथम है—डॉ० रान्योरो नोली का भारतीय रस विचार और द्वितीय है—अभिनव भारती समेत नाट्यशास्त्र का रसाध्याय।

**मूल्य :** सजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-294-4

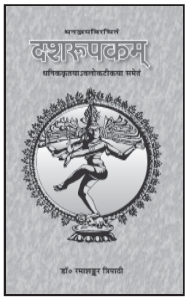


धनञ्जयविरचितं

## दशरूपकम्

धनिककृतयाऽवलोकटीकया समेतं
भावसंवलितया भूमिकया संस्कृतटिप्पण्या
राष्ट्रभाषाव्याख्यया च सनाथीकृतम्

व्याख्यादिप्रणेता सम्पादकश्च **डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 408 **मूल्य : 150.00 तृतीय संस्करण :** 2001

दशरूपक नाट्यशास्त्र का एक प्रमुख ग्रन्थ है। इसका आधार भरत का नाट्यशास्त्र है। नाट्यशास्त्र एक विशालकाय ग्रन्थ है। नाट्य (रूप = रूपक) सम्बन्धी सामग्री उसमें बिखरी पड़ी हुई है। उसे खोज कर सबका एक साथ तारतम्य बैठा कर, एक सूत्र में पिरोकर अर्थ निकालना सबके लिए सरल कार्य नहीं है। इसी दुरूहता को हटाने के लिए धनञ्जय ने नाट्यशास्त्र की रूपकविषयक सारी सामग्री एकत्रित कर दशरूपक की रचना की है।

इस ग्रन्थ में दस मुख्य रूपों या रूपकों का वर्णन है। यही कारण है कि इसे दशरूपक कहते हैं। दशरूपक को साहित्य-जगत् में जो आज महत्त्व प्राप्त है, उसका बहुत कुछ श्रेय धनिक की टीका अवलोक को ही है।

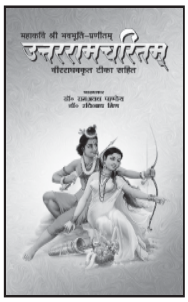


महाकवि श्री भवभूति-प्रणीतम्

## उत्तररामचरितम्

वीरराघवकृत टीका सहित

व्याख्याकार : **डॉ० रामअवध पाण्डेय, डॉ० रविनाथ मिश्र**

**पृष्ठ :** 412 **संस्करण :** 2003

शास्त्रीय एवं नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से अत्यन्त गम्भीर और वैदुष्यपूर्ण उत्तररामचरितम् यह नाटक काश्यपगोत्रीय, कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अध्येता सोमयज्ञाजी, ब्रह्मवादी तथा 'उदुम्बर' इस नाम से प्रसिद्ध महाकवि भवभूति की अमर कृति है। इस नाटक में मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के राज्याभिषेक के बाद वाले उत्तरार्द्ध चरित का वर्णन है। भगवान् रामचन्द्र के जीवन का पूर्वार्द्ध जितना संघर्षमय और यदि कह सकें तो संकटमय तथा प्रखर प्रताड़नाओं के बीच होकर चलते हुए मर्यादाओं के पालन में व्याप्त रहा है उससे थोड़ा भी न्यून उत्तरार्द्ध नहीं रहा है। जीवन के पूर्वार्द्ध में सारी समस्याएँ प्राय: ऐसी थीं जिनका दृढ़तापूर्वक संघर्ष से ही समाधान ढूँढ़ा जा सकता था किन्तु उत्तरार्द्ध में ऐसी समस्याओं पर समस्याएँ उपस्थित होती जा रही हैं जिनका समाधान पूर्णत: मर्यादा की रक्षा करते हुए वस्तुत: भगवान् रामचन्द्र जैसे चरित्र से ही सम्भव हो सका है। यत: भवभूति इस नाटक में करुणरस का पूर्णत: परिपाक दिखाकर नाट्यशास्त्र में एक अभिनव वस्तु लाना चाहते थे और सम्भवत: ऐसी कथावस्तु उन्हें दूसरी प्रतीत नहीं हुई अत: उन्होंने इसी कथावस्तु को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए चुना और जहाँ तक आलोचक विद्वानों का मत है भवभूति अपनी इस योजना में सर्वतोभावेन सफल हुए हैं।

इस उत्तररामचरितम् मूलग्रन्थ के साथ वीरराघव की टीका, जो सम्भवत: सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, दी गयी है। ग्रन्थ का प्रामाणिक अनुवाद और जहाँ आवश्यक समझा गया है टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं।

**मूल्य :** अजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-325-8

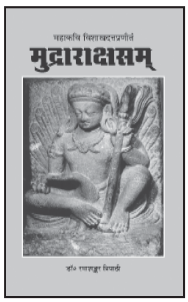


महाकवि विशाखदत्तप्रणीतं

## मुद्राराक्षसम्

रमाख्यया संस्कृतव्याख्यया राष्ट्रभाषानुवादेन
टिप्पण्या भावसंवलितया शोधपूर्णया विस्तृत-
भूमिकया च सनाथीकृतम्।

व्याख्यादिप्रणेता सम्पादकश्च **डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 400 **पंचम संस्करण :** 2008

मुद्राराक्षस संस्कृत-साहित्य-जगत् का अत्यन्त प्रकाशमान हीरक है। इसके रचयिता ने इस एक रचना से ही अपने-आप को विश्व के उन महान् नाटककारों की अग्रिम पंक्ति में बिठा दिया है जिनके ऊपर सरस्वती का वरदहस्त सर्वदा स्निग्ध शीतल छाया प्रदान किया करता है। मुद्राराक्षस जहाँ एक ओर रचयिता कवि की प्रतिभा का परिचायक है वहीं वह उनके विशद व्यावहारिक ज्ञान का भी निदर्शन है। मुद्राराक्षस का अध्ययन-मनन करनेवालों

को यह बहुत स्पष्ट रूप से प्रतीत हो जाता है कि इसका रचयिता कवि न्याय-शास्त्र, नाट्य-शास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति तथा ज्योतिष का धुरन्धर पण्डित है। राजनीति का तो वह माना हुआ योद्धा है।

**मूल्य :** अजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-656-4

महाकवि कालिदास विरचितम्

## अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(तत्त्वबोधिनी टीका सहितम्)

व्याख्याकार : **डॉ० शिवशंकर गुप्त**

**पृष्ठ :** 320 **चतुर्थ संस्करण :** 2007

विश्व साहित्य के कवियों में महाकवि कालिदास का स्थान मूर्धन्य है। महाकवि ने अपनी अनुपम साहित्यिक रचना कौशल के बल पर भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को अक्षुण्ण रक्खा है। इनकी रचनाओं में वर्णित नैतिक आचरण एवं सदाचार के नियम आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं एवं मानवीय गृहस्थ जीवन में व्यवहृत करने योग्य हैं। यह नाटक संस्कृत साहित्य का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व साहित्य का समुज्ज्वल रत्न है। प्रस्तुत नाटक 7 अङ्कों का है। इसमें चन्द्रवंशी राजा दुष्यन्त एवं मेनका नामक अप्सरा की पुत्री 'शकुन्तला' दोनों की प्रणय-कथा है। इस ग्रन्थ में अन्वय, भाषानुवाद, संस्कृत व्याख्या, व्याकरण, समास, कोश, व्युत्पत्ति, गुण, रीति, रस, अलंकार, छन्द एवं नाट्यशास्त्रीय सौन्दर्य (रस, ध्वनि) आदि का भी समावेश है। 'शाकुन्तल' ग्रन्थ देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों के बी०ए०, एम०ए०, शास्त्रीय, आचार्य तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित है।

**मूल्य :** अजिल्द : **80.00** ISBN : 978-81-7124-588-8

महाकविकालिदासप्रणीतं

## मेघदूतम्

म०म० पं० **मल्लिनाथ**कृतसञ्जीवन्या व्याख्यया,
आचार्य **केशवप्रसाद मिश्र** निर्मितेन पद्यानुवादेन, तथा
**डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठि**विरचितया
सरस्वतीसमाख्यया व्याख्यया, राष्ट्रभाषानुवादादिभिश्च संवलितम्।

व्याख्यादिप्रणेता सम्पादकश्च **डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 296 **चतुर्थ संस्करण :** 2005

मेघदूत महाकवि कालिदास की चमकती लेखनी का अमृत-निष्यन्द है। विश्ववन्द्य इस काव्यरत्न को पढ़ने से प्रतीत होता है कि महाकवि की लेखनी कल्पतरु की सुकुमार शाखा की बनी थी। किसी व्यक्ति को दूत बनाकर सन्देश भेजने की भारतीय प्रथा अति प्राचीन है। किन्तु स्वतन्त्ररूप से दूतकाव्य का प्रणयन सर्वप्रथम महाकवि कालिदास ने ही किया है। मेघ को दूत बनाने की कल्पना महाकवि की अपनी है। मेघ को दूत बनाने तथा वियुक्ता प्रिया को सन्देश कहने में महाकवि की दक्षता तथा अनुपमता स्पष्ट परिलक्षित होती है। 'छात्रों को अधिक-से-अधिक सहायता पहुँचाई जा सके' इस बात को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए यह संस्करण तैयार किया गया है। कोई भी व्यक्ति इस संस्करण की सहायता से बिना किसी की सहायता लिए हुए भी कविता-कामिनी-विलास महाकवि कालिदास के अतिगम्भीर भावों के तल का स्पर्श अनायास कर सकता है। प्रारम्भ में अनुसन्धानात्मक भूमिका के साथ इस संस्करण को अन्वय, शब्दार्थ, अर्थ, टिप्पणी तथा व्युत्पत्ति आदि से सजाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

**मूल्य :** अजिल्द : **50.00** ISBN : 81-7124-457-2

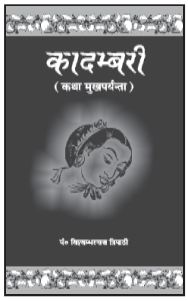


बाणभट्टविरचितम्

## कादम्बरी : कथामुखम्

सम्पादक : **पं० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 292 **चतुर्थ संस्करण :** 2006

कादम्बरी की कथावस्तु बाण ने बृहत्कथा से ग्रहण की है। बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी गयी थी। दुर्भाग्यवश यह कृति आज अपने मूलरूप में अनुपलब्ध है। क्षेमेन्द्र की 'बृहत्कथा मञ्जरी' और सोमदेव के 'कथासरित्सागर' में इसका संक्षिप्त रूप पाया जाता है। बाण को गुणाढ्य की बृहत्कथा ज्ञात थी। यह बृहत्कथा बाण के सम्मुख थी। राजा सुमन की कथा कादम्बरी से मिलती-जुलती है। स्थान एवं पात्रों के नाम परिवर्तन के साथ परिपक्व प्रतिभा की मञ्जुला-कल्पना-विच्छित्ति-समन्वित सहृदय-हृदयावर्जक रमणीय भाषा के माध्यम से बाण ने राजा सुमन की कथा को ही कादम्बरी के रूप में अवतरित किया है।

**मूल्य :** अजिल्द : **40.00** ISBN : 81-7124-517-X

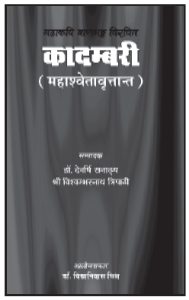


महाकवि बाणभट्ट विरचित

## कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)

सं० : **डॉ० देवर्षि सनाढ्य, पं० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी**
आलोचनाकार : **डॉ० विद्यानिवास मिश्र**

**पृष्ठ :** 228 **संस्करण :** 2006

कादम्बरी का 'महाश्वेतावृत्तांत' कादम्बरी के पाठकों के निमित्त विशेष महत्त्वपूर्ण प्रसंग है। बाण की रसमयी वाणी का कला-विकास इस संविधान में अपनी पराकाष्ठा को पहुँचा है। गद्य-रचना का अद्‌भुत संघटन, अलंकारों की मार्मिक योजना, वर्णन की सूक्ष्मदृष्टि तथा प्रेम की तीव्र अनुभूति, आकर्षण एवं वियोग-व्यथा का विश्वव्यापी संवेदन 'महाश्वेतावृत्तान्त' में अत्यन्त सजीव है। इसमें कादम्बरी और महाश्वेता के प्रणय की द्विवृत् कथा बड़े कौशल से परस्पर गूँथी गयी है। यद्यपि यह ग्रन्थ गद्य में है, तथापि रसपूर्ण और अलंकारयुक्त होने के कारण भारतीय साहित्यशास्त्रियों ने इसे काव्य का नाम दिया है।

**मूल्य :** अजिल्द : **40.00** ISBN : 81-7124-453-X

## वेदचयनम्

व्याख्याकार : **विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी**

**पृष्ठ :** 392 **संस्करण :** 2008

'वेदचयनम्' का प्रयोजन मात्र पाठ्य-पुस्तक से कुछ अधिक है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वेद का प्रयोजन मात्र मूल स्रोत से कुछ अधिक है। वेद की प्रारम्भिक शिक्षा इतिहास की दृष्टि से उतना महत्त्व नहीं रखती, जितना भारतीय वाङ्मयमात्र को समझने के लिए प्रमाण के रूप में। तीन बातें इस वाङ्मय में मुख्य हैं, लिखित परम्परा से अधिक वाचिक परम्परा पर बल, मूल ज्ञान-सम्पद् को सतत उपबृंहित करने की अनिवार्यता में विश्वास तथा स्व के उत्सर्ग द्वारा स्वाधीनता की परिकल्पना। ये तीनों बातें वैदिक साहित्य की आधारपीठिका बनाती हैं। प्रस्तुत चयन में इन्द्र, विष्णु, विश्वेदेव, हिरण्यगर्भ, वाक् पुरुष, शिवसङ्कल्प, इन्द्र एवं पृथिवी आदि 10 सूक्त हैं। पहले छः ऋग्वेद से, पुरुष एवं शिवसङ्कल्प यजुर्वेद से, अग्निसूक्त ऋग्वेद से एवं पृथिवीसूक्त अथर्ववेद से संगृहीत हैं। इसकी व्याख्या में सत्य के साहस के साथ-साथ परम्परा के प्रति प्रणिपात है। **—विद्यानिवास मिश्र**

**मूल्य :** अजिल्द : **60.00** ISBN : 978-81-7124-219-1

प्रतिबंधित होगा जिनके नम्बरों का अन्तिम अंक एक या छह होगा। मंगलवार के लिए ऐसे अंक दो या सात तय किए गए हैं। बुधवार को तीन या आठ, गुरुवार को चार या नौ तथा शुक्रवार को अंत में पाँच या शून्य अंक वाले वाहन सड़कों पर नहीं उतर सकेंगे। हालांकि बीजिंग महानगर पालिका ने यह व्यवस्था ट्रैफिक जाम से निपटने के उद्देश्य से की है परन्तु इससे दो और लाभ मिलेंगे। इससे जहाँ प्रदूषण के फैलाव में कुछ कमी आएगी वहीं गैस, पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन की बचत हो सकेगी।

### अमेरिका में हिन्दी

हिन्दी भाषा के ज्ञान को अमेरिका में एक सामयिक जरूरत के तौर पर देखा जा रहा है। एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में हिन्दी के विकास को देखते हुए टेक्सास प्रांत के स्कूलों ने अपने हाई स्कूल के छात्रों के लिए हिन्दी की पाठ्य पुस्तक प्रस्तुत की है। इसका नाम है—'नमस्ते जी'। 480 पृष्ठों वाली यह किताब भारतीय मूल के शिक्षक श्री अरुण प्रकाश ने करीब आठ सालों की मेहनत के बाद तैयार की है। टेक्सास प्रांत हिन्दी की लोकप्रियता के मामले में अमेरिका में सबसे आगे है।

### वेबस्टर शब्दकोश के रचयिता की 250वीं वर्षगाँठ

गत दिवस अमेरिका के येल विश्वविद्यालय द्वारा वेबस्टर शब्दकोश के रचयिता नोआ वेबस्टर की 250वीं वर्षगाँठ मनाई गई, जिस मौके पर उनकी याद में लेक्चर, आलेख आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वेबस्टर की जीवनी पर काम कर रहे जोशुआ केंडल ने कहा, ''वेबस्टर ने हमारी भाषा और अमेरिकी अस्तित्व को आकार दिया था।''

वर्ष 1800 की बात है जब अमेरिका के कनेक्टिकट राज्य में एक समाचार-पत्र के पिछले पृष्ठ पर एक आवारा मवेशी पर एक किसान द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार की घोषणा के ठीक ऊपर नोआ वेबस्टर नामक एक व्यक्ति द्वारा पहली 'अमेरिकन भाषा' का शब्दकोश तैयार किए जाने की खबर छपी थी। उस समय वेबस्टर को उपहास का पात्र समझा गया था, क्योंकि उस समय अमेरिका में ब्रिटिश इंग्लिश का ही प्रयोग होता था या जर्मन, स्वीडिश और डच भाषाओं का। अमेरिकी आजादी की लड़ाई के वर्षों के दौरान वेबस्टर का मानना था कि अमेरिका के स्कूलों में ब्रिटिश किताबों के स्थान पर उनकी अपनी किताबें होनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने एक 'स्पेलर' तैयार किया और उसे स्कूलों में लगवाने के लिए वे देशभर में घूमे थे। केंडल कहते हैं, ''वेबस्टर ने हमें हमारी भाषा से एकसूत्र में बाँधा था।''

# सम्मान-पुरस्कार

### कुँवर नारायण समेत तीन को ज्ञानपीठ पुरस्कार

वर्ष 2005 और 2006 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं के नाम घोषित कर दिये गये हैं। 2005 के लिए हिन्दी के प्रख्यात कवि **कुँवर नारायण** को यह पुरस्कार दिया जायेगा। वर्ष 2006 के पुरस्कार के लिए कोंकणी के **रवीन्द्र केलकर** और संस्कृत के विद्वान **सत्यव्रत शास्त्री** को संयुक्त रूप से चुना गया है।

कोंकणी और संस्कृत के लिए पहली बार ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया है। पुरस्कार पाने वाले तीनों ही रचनाकार साहित्य अकादमी सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। हिन्दी कविता के शलाका पुरुष कुँवर नारायण का जन्म 1927 में उ०प्र० के फैजाबाद जिले में हुआ। इन दिनों वह दिल्ली में रहते हैं। नई कविता आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुँवर नारायण अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तीसरा सप्तक' (1959) के प्रमुख कवियों में रहे हैं। कुँवर नारायण को अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के जरिये वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। कुँवरनारायण को समझना उस प्रयोगधर्मी मानसिकता को समझना है जो अपना स्रोत संस्कृति के प्रतीकों-मिथकों से लेकर आधुनिक जीवन मूल्यों तक तलाशते हैं इसीलिए उनमें सरलीकरण नहीं है बल्कि गहन-चिन्तन, विश्लेषण है; यथार्थ की प्रस्तुति ही नहीं बल्कि उसकी सहज स्वीकृति भी है। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'आत्मजयी', 'आकारों के आसपास' और 'चक्रव्यूह' आदि शामिल हैं। रवीन्द्र केलकर का जन्म सात मार्च 1925 में दक्षिण गोवा में हुआ। कोंकणी भाषा मण्डल की स्थापना में उनकी अहम भूमि रही और वर्तमान में वह कोंकणी साहित्य के सबसे मजबूत स्तम्भ हैं। संस्कृत के विद्वान प्रो० सत्यव्रत शास्त्री मनीषी रचनाकार हैं। उन्होंने एक-एक हजार श्लोक वाली तीन महत्त्वपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं।

### प्रो० परमानंद को दिया गया व्यास सम्मान

प्रतिष्ठित के०के० बिड़ला फाउण्डेशन का वर्ष 2006 का व्यास सम्मान एक संक्षिप्त और सादे समारोह में सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो० परमानन्द श्रीवास्तव को उनके आवास पर दिया गया।

**प्रो० परमानन्द** को व्यास सम्मान उनकी कृति 'कविता का अर्थात' पर दिया गया है। सम्मान स्वरूप उन्हें शाल, व्यास सम्मान, के०के० बिड़ला फाउण्डेशन का प्रतीक चिह्न और ढाई लाख रुपए का चेक भेंट किया गया। प्रो० श्रीवास्तव को यह सम्मान नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में दिया जाना था लेकिन फाउण्डेशन के अध्यक्ष के०के० बिड़ला के निधन के कारण समारोह आयोजित नहीं हुआ और व्यास सम्मान उन्हें उनके घर पर ही देने का निर्णय लिया गया।

### सर सैयद अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी द्वारा स्थापित पहला सर सैयद अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार पाकिस्तान के प्रख्यात लेखक और समाजसेवी **जाकिर अली खाँ** को सर सैयद अहमद खाँ के 191वें जन्म दिवस पर आयोजित सर सैयद दिवस समारोह में प्रदान किया गया। उन्होंने पाकिस्तान में सर सैयद अहमद खाँ मिशन और विजन को जन-जन तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाई है। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की परम्पराओं पर 'रिवायत-ए-अलीगढ़' नामक पुस्तक तथा अपनी आत्मकथा 'यादों के दस्तरखान' भी लिखी है।

### संस्कृति पुरस्कार 2008

नई दिल्ली के संस्कृति प्रतिष्ठान ने इस वर्ष के संस्कृति पुरस्कार *पंजाबी साहित्य के लिए* **इन्दरजीत चौधरी**, *पत्रकारिता के लिए* हिन्दुस्तान टाइम्स को पत्रकार **चित्रांगदा चौधरी**, *कला के लिए* **रजनी शेट्टर**, *संगीत के लिए* **रंजनी-गायत्री** तथा *विशिष्ट सामाजिक उपलब्धि के लिए* संस्था **एबिलिटी अनलिमिटेड** को दिए जाने की घोषणा की है। संस्कृति प्रतिष्ठान विगत उन्तीस वर्ष से साहित्य, कला, संस्कृति, प्रदर्शनी, कला तथा सामाजिक-सांस्कृतिक उपलब्धि के लिए प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान करता आ रहा है।

### कृष्ण बलदेव वैद को सम्मान

मुजफ्फरपुर (बिहार) में अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति सम्मान समिति द्वारा पहला अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति सम्मान वरिष्ठ कथाकार **कृष्ण बलदेव वैद** को प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें 11,111 रुपए की राशि प्रदान की गई जो उन्होंने समिति को इस विनम्र अनुरोध के साथ लौटा दी कि इस राशि का हिन्दी के विकास या किसी सामाजिक कार्य के लिए उपयोग किया जाए। समिति के संयोजक वीरेन्द्र नंदा ने घोषणा की कि यह राशि बिहार के बाढ़ पीड़ितों के राहत कार्य के लिए दी जाएगी।

### एकान्त श्रीवास्तव को 'मलखान सिंह सिसोदिया पुरस्कार'

'वर्तमान साहित्य मलखान सिंह सिसोदिया' कविता पुरस्कार, वर्ष 2008 के लिए चर्चित कवि **एकांत श्रीवास्तव** के कविता संग्रह 'बीज से फूल तक' का चयन किया गया है। इस शृंखला का यह दूसरा पुरस्कार है। सन् 1964 में जन्मे तथा मूल रूप से जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ के निवासी एकांत श्रीवास्तव के अब तक तीन कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'शेल्टर फ्राम दि रैन' अंग्रेजी में अनूदित इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संचयन है। अनेक भारतीय भाषाओं में भी इनकी कविताएँ अनूदित हैं।

'लोर्का' और कुछ दक्षिण अफ्रीकी कवियों की कविताओं का इन्होंने अंगेजी से हिन्दी में अनुवाद किया है। आजकल भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता की पत्रिका 'वागर्थ' के सम्पादक हैं।

### डॉ० शकुन्तला को बाल-साहित्य सम्मान

बाल-साहित्य की पत्रिका 'बाल-वाटिका' द्वारा अखिल भारतीय बाल-साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान-समारोह में सुप्रसिद्ध बाल-साहित्य रचनाकार **डॉ० शकुन्तला कालरा** को बाल-साहित्य एवं आलोचना के उन्नयन में विशिष्ट योगदान के लिए अखिल भारतीय 'मनोहर सिंह मेहता स्मृति बाल-साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया।

### गोविंद व्यास व सुभाष को अट्टहास सम्मान

लखनऊ। प्रसिद्ध व्यंग्य कवि **गोविंद व्यास** को इस वर्ष का 'अट्टहास शिखर सम्मान' दिया जाएगा। साथ ही 'अट्टहास युवा व्यंग्यकार सम्मान' **सुभाष चंदर** को मिलेगा। यह सम्मान उन्हें 30 नवम्बर को लखनऊ महोत्सव में आयोजित अट्टहास सम्मान समारोह में दिया जाएगा। अट्टहास सम्मान के निर्णायक मण्डल में गोपाल चतुर्वेदी, अशोक चक्रधर आदि शामिल थे। यह सम्मान 1990 से दिया जा रहा है।

### कमर मेवाड़ी को साकेत साहित्य सम्मान

राजसमंद, 19 अक्टूबर 2008 'सम्बोधन' पत्रिका के सम्पादक एवं वरिष्ठ साहित्यकार **कमर मेवाड़ी** को 'साकेत साहित्य संस्थान' आमेट की ओर से वर्ष 2008 का 'साकेत साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया। जिला साहित्यकार समागम कार्यक्रम में साकेत संगठन के सभाध्यक्ष विजयसिंह राव, अध्यक्ष दलीचन्द कच्छारा एवं प्रवासी युवा साहित्यकार भगवत सिंह पारस ने कमर मेवाड़ी को प्रशस्ति-पत्र, शाल, स्मृति चिह्न के साथ ग्यारह हजार रुपये का चेक भेंट कर अभिनन्दन किया।

### बाल साहित्य संगम, पटियाला

सरदार प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री पंजाब द्वारा बाल-साहित्य लेखक **डॉ० दर्शन सिंह आशट** को लुधियाना के गुरुनानक स्टेडियम में एक विशाल समागम में उनके उल्लेखनीय बालसाहित्य लेखन के लिए राज्य पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में ग्यारह हजार रुपये की नकद राशि के अलावा एक शाल, पदक और प्रमाणपत्र शामिल हैं।

### भीमसेन जोशी को भारतरत्न

भारतीय शास्त्रीय संगीत के पुरोधा **पण्डित भीमसेन जोशी** (86) को देश के सर्वोच्च असैन्य सम्मान भारतरत्न के लिए चुना गया है। सात साल बाद सरकार किसी सक्रिय कलाकार को यह सर्वोच्च सम्मान देगी। जोशी कला व साहित्य क्षेत्र से छठे व्यक्ति हैं, जिन्हें भारतरत्न दिया जा रहा है। शास्त्रीय गायन में सुब्बुलक्ष्मी के बाद वह दूसरे कलाकार हैं, जिन्हें यह सम्मान मिलेगा। पिछली बार शहनाई वादक बिस्मिल्ला खान को भारतरत्न दिया गया था। पं० जोशी ने कहा कि मैं ऐसे सभी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायकों की ओर से यह सम्मान स्वीकार करता हूँ, जिन्होंने अपनी जिन्दगी संगीत के लिए समर्पित कर दी है।

### प्रो० लोकेश चंद्रा को 'दयावती मोदी पुरस्कार'

गत दिनों बौद्ध धर्म से संबद्ध विद्वान् **प्रो० लोकेश चंद्रा** को कला, संस्कृति एवं शिक्षा क्षेत्र का वर्ष 2008 का प्रतिष्ठित 'दयावती मोदी पुरस्कार' गृहमंत्री माननीय श्री शिवराज पाटिल के कर-कमलों से प्रदान किया गया। पुरस्कार में दो लाख इक्यावन हजार रुपये, रजत शील्ड तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री के०एम० सिंह मुख्य अतिथि थे।

### इतिहासकार रोमिला थापर को 'क्लूज पुरस्कार'

मशहर भारतीय इतिहासकार **रोमिला थापर** को प्रतिष्ठित 'क्लूज पुरस्कार' का सहविजेता चुना गया है। 10 लाख डालर (करीब 50 लाख रुपये) की इनामी राशि वाला यह पुरस्कार अमेरिकन लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस द्वारा प्रदान किया जाता है। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के बयान में कहा गया है, ''थापर ने भारतीय सभ्यता की उत्पत्ति की ठोस प्रस्तुति कर इसके नए और बहुलतावादी रूप को पेश किया और इसकी ऐतिहासिक जागरूकता को ढूँढने का प्रयास किया।'' जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में इतिहास की मानद प्रोफेसर 77 वर्षीय थापर को इस लब्धप्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए आयरलैंड के 73 वर्षीय इतिहासकार पीटर राबर्ट लैमोंट ब्राउन के साथ चुना गया है।

### प्रौढ़ साहित्य सम्मान-2008

नई दिल्ली। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने प्रौढ़ साहित्य के रचनाकारों, प्रकाशकों तथा संस्थाओं के प्रोत्साहन हेतु 'प्रौढ़ साहित्य सम्मान' देने का निर्णय लिया है। इसके लिए सन् 1999 से 2008 की अवधि में प्रकाशित मौलिक पुस्तकें आमन्त्रित हैं। सम्मान राशि ग्यारह हजार रुपए। पुस्तक की चार प्रतियाँ जिनमें से तीन प्रतियों पर लेखक/लेखिका के नाम पर चिप्पी लगाकर एक अलग पैकेट में सील बन्द कर गोपनीय 'प्रौढ़ साहित्य सम्मान वर्ष 2008' लिखें और चौथी प्रति के साथ रचनाकार का संक्षिप्त परिचय भी लगा दें। इन दोनों पैकटों को 'प्रौढ़-साहित्य सम्मान वर्ष 2008' लिखकर 31-12-2008 तक प्रेषित करें। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, 17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002

# स्मृति-शेष

### पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० विश्वनाथप्रताप सिंह का निधन

हृदय के कवि, कलाकार और सैद्धान्तिक राजनीति के पैरोकार पूर्व प्रधानमंत्री **डॉ० विश्वनाथ प्रताप सिंह** ने ब्लड-कैंसर जैसी घातक बीमारी से जूझते हुए, दिल्ली स्थित अपोलो-अस्पताल में आखिरी साँस ली। भारतीय समाज के पिछड़े और दलित वर्ग के उद्धार के लिए डॉ० सिंह ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में दृढ़तापूर्वक मंडल-आयोग की रिपोर्ट को लागू किया, जिसका प्रभाव भारतीय राजनीति पर आज तक कायम है। दलितों के उत्थान और सामाजिक-न्याय के लिए डॉ० विश्वनाथप्रताप सिंह स्मरणीय रहेंगे।

### डॉ० भानुशंकर मेहता की पत्नी का निधन

वाराणसी। कला मर्मज्ञ व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० भानुशंकर मेहता की धर्मपत्नी **सुहासिनी मेहता** (84) का निधन हो गया। वह अपने पीछे दो पुत्रों भूभौतिकी विज्ञानी डॉ० राहुल और डॉ० संजय का भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

### गंगाधर गाडगील का निधन

मराठी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, नाटककार और समालोचक **गंगाधर गाडगील** का 16 सितम्बर को निधन हो गया। उनकी गणना मराठी नवल कथा के प्रवर्तकों में की जाती है। उनकी अनेक कृतियाँ अनूदित होकर हिन्दी में उपलब्ध हैं।

### गंगाशरण तृषित नहीं रहे

सुप्रसिद्ध कवि **गंगाशरण तृषित** का निधन हो गया। वे राष्ट्रीय विचारों को प्रतिपादित करने वाले कवि थे। 'हम हैं हिन्दुस्तानी' काव्य-संग्रह के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति से निकलकर समाज, राष्ट्र में अपने मनुष्यत्व का प्रसार किया।

### 'सन्मार्ग', दैनिक, कोलकाता के प्रकाशक एवं सम्पादक श्री रामावतार गुप्त का निधन

पिछले दिनों 'सन्मार्ग'—दैनिक, कोलकाता के प्रकाशक एवं सम्पादक **श्री रामावतार गुप्त** (84) के निधन से हिन्दी पत्रकारिता की अपूरणीय क्षति हुई है। लगभग 50 वर्षों तक सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के साथ देश के पूर्वोत्तर भाग में हिन्दी-पत्रकारिता की प्रतिष्ठा हेतु उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

### पत्रकार कार्ल्टन फिग नहीं रहे

वरिष्ठ पत्रकार कार्ल्टन फिग का शनिवार, 29 नवम्बर को लम्बी बीमारी के बाद लखनऊ शक्तिनगर स्थित आवास पर निधन हो गया। वह 66 वर्ष के थे। श्री फिग ने अंग्रेजी दैनिक 'पायनियर' से पत्रकारिता की शुरुआत की थी। नार्दन इण्डिया पत्रिका के समाचार सम्पादक भी रहे। वह नेशनल हेराल्ड से भी जुड़े रहे।

# संगोष्ठी/लोकार्पण

### 'पण्डित राज मुरलीधर सौरभम्' का लोकार्पण

वाराणसी। भारत की प्रचीन परम्परा है जो पठन पाठन को साधना मानकर संस्कृति और सरकार को बल देती है। काशी की पाण्डित्य परम्परा को पण्डित राज मुरलीधर पाण्डेय ने जो गति दी है वह सराहनीय है। उक्त विचार मानस मन्दिर में आयोजित आचार्य मुरलीधर पाण्डेय अभिनन्दन ग्रन्थ के लोकार्पण कार्यक्रम में लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो० श्रीधर वशिष्ठ ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा प्राचीन परम्परा को जीवन्त रखने के लिए स्कूल खोलने की जरूरत है, क्योंकि इनके विकास से आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसे कदाचार स्वत: समाप्त हो जाएँगे। इस अवसर पर 'पण्डितराज मुरलीधर सौरभम्' पुस्तक का लोकार्पण पं० वीरभद्र मिश्र ने किया।

### अशोककुमार सिन्हा लिखित खण्ड काव्य 'पिता' का लोकार्पण

प्रख्यात समालोचक व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ० नामवर सिंह ने विगत 1 नवम्बर, 2008 को पटना के संग्रहालय सभागार में युवा कवि अशोककुमार सिन्हा द्वारा लिखित खण्ड काव्य 'पिता' का लोकार्पण करते हुए कहा कि 'पिता' को केन्द्र बनाकर किसी खण्ड काव्य की रचना साहित्य जगत की सम्भवत: पहली घटना है। डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि हिन्दी साहित्य में माँ पर लिखित कई कविताएँ मौजूद हैं। निराला ने भी अपनी बेटी की मृत्यु पर सरोज स्मृति की रचना की थी लेकिन मुझे याद नहीं हिन्दी में किसी ने अपने पिता पर इतनी लम्बी कविता लिखी हो।

### संवेदना की श्रेष्ठता : प्रज्ञा चक्षु कवियों का काव्यपाठ

प्रदेश ही नहीं पूरे देश में अपनी तरह की प्रथम व अनूठी पहल करते हुए साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल द्वारा भारत भवन में 2 नवम्बर 08 की शाम देश के प्रख्यात नेत्रहीन कवियों का काव्य पाठ आयोजित किया गया।

इस अभिनव आयोजन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश के संस्कृति सचिव श्री मनोज श्रीवास्तव एवं मथुरा के वरिष्ठतम कवि श्री रामखिलाड़ी स्वदेशी की अध्यक्षता मे ंदीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मनोज श्रीवास्तव ने विश्व के उन सभी नेत्रहीन कवि, साहित्यकार, संगीतकार, गायक, वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों तथा धार्मिक पुराणों में अंकित सभी हस्तियों का जिक्र किया। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि ''मनुष्य के इन्द्रियायतन के एक संवेदन की अल्पता उसकी संवेदना की श्रेष्ठता बन जाती है। प्रज्ञा चक्षु कवियों के इस सर्वथा अनूठे कार्यक्रम में उपस्थित कवियों की प्रतिभा इसका प्रमाण है।''

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल के निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक ने इस आयोजन के बारे में कहा कि ''दुनिया को देखकर उसकी सुन्दरता का बखान करना आसान है किन्तु कुछ भी न देखकर अगर कुछ कहा जाए तो उसकी बात अलग ही होती है।''

प्रज्ञा चक्षु कवि सम्मेलन में भागीदारी करने वाले कवियों की रचनाओं में जहाँ समाज के खोखलेपन पर करारी चोट की गयी तो वहीं लगन और परिश्रम के साथ ही आने वाले सुनहरे कल का विश्वास भी था। काव्यपाठ में जीवन की मुश्किलों से हार नहीं मानने और आन्तरिक ऊर्जा से जीवन पथ को आलोकित करने का प्रण श्रोताओं के अन्तस् में गहरे तक उतर गया।

इस आयोजन में सम्मिलित कवि थे—डॉ० नरेन्द्र शर्मा (जयपुर), प्रो० विनोद आसूदानी (नागपुर), प्रो० राधेश्याम पनवरिया 'पागल' (बरेली), सन्तोषकुमार सूर्यवंशी (नोएडा), अकबर ताज (खंडवा), दयाल सिंह पवार (दिल्ली), योगेशकुमार शुक्ल (रायबरेली), राजेश आसूदानी (नागपुर), अवधेश विश्वकर्मा (भोपाल), मधुकर तालेवर (दिल्ली), अवधबिहारी मिश्र (खरगोन), अनुराग पाठक (दिल्ली)।

### जय चक्रवर्ती का दोहा संग्रह विमोचित

सुपरिचित कवि जय चक्रवर्ती के सद्य: प्रकाशित दोहा संग्रह 'सन्दर्भों की आग' का विमोचन जमशेदपुर में आयोजित अक्षर कुंज में झारखण्ड विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष इन्दर सिंह नामधारी एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली के करकमलों द्वारा किया गया।

### 'नारी-विमर्श' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

गुजरात में पारडी एजुकेशन सोसायटी द्वारा जे०पी० पारडीवाला आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज में 'नारी-विमर्श' विषय पर दो दिवसीय चार सत्रों में विभाजित राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें चंद्रकांता, डॉ० अशोककुमार मिश्र, डॉ० शरीफा बिजलीवाला, डॉ० योगिनी व्यास, डॉ० सबिता उपाध्याय तथा प्राध्यापकों, साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों ने साहित्य के साथ-साथ आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक क्षेत्र में नारी के योगदान पर चर्चा की।

### हिन्दी संस्कृति सम्मेलन

दिल्ली में परिवर्तन जन कल्याण समिति द्वारा हिन्दी संस्कृति सम्मान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए भारत में मॉरीशस के राजदूत मुखेश्वर चुनी ने कहा कि हिन्दी भारत और मॉरीशस के सम्बन्धों को मधुर बनाने में एक बड़ी कड़ी का काम कर रही है। मॉरीशस लघु भारत नहीं, बल्कि बृहत्तर भारत का अभिन्न अंग है। उन्होंने कहा कि हम भारत से भी अच्छी तरह दीपावली और होली ही नहीं मनाते हैं, बल्कि अच्छी हिन्दी भी बोलते हैं।

पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जीवीजी कृष्णमूर्ति ने कहा कि भारत भाषाओं का देश है, लेकिन प्रत्येक भारतवासी को गर्व से हिन्दी सीखनी और बोलनी चाहिए। केन्द्रीय श्रम राज्य मंत्री आस्कर फर्नांडिस ने कहा कि हिन्दी की स्थिति पहले से बेहतर हुई है।

### वैदिक विद्याओं की भूमिका

नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ वैदिक कल्चर तथा मीडिया ट्रस्ट ऑफ इण्डिया ऑफ सेल्फ रिइनकारनेशन वर्ल्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में एक आयोजन किया गया। वैदिक विद्याओं की आधुनिक जीवन में व्यावहारिक भूमिका विषय पर गोष्ठी में भारतीय प्राच्य विद्याओं को पुन: प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया गया।

समारोह की मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने प्राचीन वैदिक विद्याओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वास्तुविद् प्रोफेसर डॉ० बी०बी० पुरी द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर रॉविन द्वारका को वर्ष 2008 के लिए 'गांधी मेमोरियल अवार्ड', वैदिक प्राच्य विद्याओं में सराहनीय योगदान के लिए प्रोफेसर बी०बी० पुरी तथा शंकर अडावल को 'वैदिक सिगनेचर सम्मान' से विभूषित किया गया।

### सकारात्मक रचना से देश मजबूत बनेगा : प्रो० नन्दकिशोर पाण्डेय

अखिल भारतीय नवोदित साहित्यकार परिषद काशी (सम्बद्ध अखिल भारतीय साहित्य परिषद, दिल्ली) के तत्त्वावधान में 'हेमन्तकाव्यगोष्ठी' (युवा कवि सम्मेलन) का आयोजन सांस्कृतिक सभागार, विश्व संवाद केन्द्र, लंका में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो० राधेश्याम दूबे, उप विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू० ने कविता एवं साहित्य की महत्ता को रेखांकित करते हुए उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए उत्प्रेरक तथा प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो० नन्दकिशोर पाण्डेय, आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजीव गांधी अरुणाचल विश्वविद्यालय, ईटानगर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय साहित्य परिषद् से जुड़े हुए साहित्यकारों को चाहिए कि वे भाषा

और प्रान्त भाव से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता के लिए रचनात्मक धरातल पर कार्य करें। भारतीय संस्कृति के सकारात्मक पक्षों का उद्घाटन ही देश को मजबूत करेगा। हम कई ऋषियों के अनुगामी हैं, एक ही ऋषि के विचार का पोषण करना साम्प्रदायिक धारणा है।

### देवेन्द्र इस्सर पर विशेष अंक

नई दिल्ली में हिन्दी भवन के सभागार में 'शब्दयोग' त्रैमासिक पत्रिका द्वारा आयोजित समारोह में कथाकार देवेन्द्र इस्सर पर केन्द्रित 'शब्दयोग' पत्रिका के 10वें अंक का विमोचन वरिष्ठ कथाकार गोविंद मिश्र द्वारा किया गया। 'शब्दयोग' के सम्पादक सुभाष पंत ने कहा कि अस्सी वर्षीय देवेन्द्र इस्सर के लेखन में कई व्यक्ति लेखक, आलोचक और चिंतक विद्यमान हैं।

### केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 28वाँ वार्षिक समारोह

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 28वाँ वार्षिक समारोह रंगविलास पालस, किषक्केकोट्टा में मनाया गया। डॉ० पी लता (हिन्दी विभाग, विमन्स कॉलेज) के स्वागत भाषण के पश्चात् अकादमी के 28वें वार्षिक समारोह का उद्घाटन सर्वश्री तेन्नला बालकृष्णपिल्लै जी (राज्य सभा मेम्बर) ने डॉ० नायर जी की अध्यक्षता में किया। उन्होंने डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर जी के हिन्दी सेवा कार्यों की खूब प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि देशरत्न डॉ० नायर जी का सारा जीवन हिन्दी और देश के लिए समर्पित हुआ है।

एस०बी०टी० हिन्दी साहित्य पुरस्कार (मौलिक रचना) श्री कवियूर शिवराम अय्यर की 'वनमाला' और (शोध प्रबन्ध) डॉ० आशा एस नायर के 'बच्चन का काव्य' को दिया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार डॉ० जोर्जकुट्टी वट्टोत के 'खुरपी' नामक स्वतन्त्र वैज्ञानिक लेखन को मिला। भारत ज्योति अवार्ड से विभूषित शास्तांकोट्टा श्री बालचन्द्रन को भी अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

### 'अनन्तपुरि और मैं'
(डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर की आत्मकथा)

'अनन्तपुरि और मैं' ग्रन्थ का लोकार्पण महाराज श्री उन्नाडम तिरुनाल के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। महाराज की राय में नायर जी की आत्मकथा का अनुवाद भारत की अन्य भाषाओं में भी होना चाहिए। क्योंकि भावी पीढ़ी यह जान ले कि इस प्रकार का एक मनीषी इस केरल में जी रहा है। नायरजी की आत्मकथा आदर्श जीवन बिताने वाले, साहित्य कला क्षेत्रों में कठिन साधनारत युवकों के लिए प्रेरणादायक ही है।

### 21वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 139वीं जयन्ती तथा भारतीय स्वतन्त्रता की 60वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, रूपाम्बरा द्वारा शिमला में आयोजित 21वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला, राजभाषा प्रदर्शनी एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का तीन दिवसीय भव्य आयोजन शिमला स्थित हॉलीडे होम होटल में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। हिमाचल प्रदेश की महामहिम राज्यपाल श्रीमती प्रभा राव ने बापू की प्रतिकृति के सामने प्रदीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। महामहिम ने कहा—''बापू ने हिन्दी को लेकर स्वाधीनता संग्राम छेड़ा था। आज वही हिन्दी संकीर्णता, अंधविश्वास, आर्थिक पिछड़ेपन, अलगाववाद आदि संकटों से सामना करने हेतु अमोघ हथियार है।'' उन्होंने बताया कि गाँधीजी ने अपने सुपुत्र देवदास गाँधी को हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगाया तथा देश में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्वैच्छिक हिन्दी सेवी संस्थाओं की स्थापना हुई। इससे देश भर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया गया।

### 5वाँ राष्ट्रीय पत्रकार-साहित्यकार सम्मेलन

हिमालय ढेरि हिन्दुस्तान राष्ट्रीय पाक्षिक समाचार पत्र की 16वीं वर्षगाँठ पर 5वाँ राष्ट्रीय पत्रकार-साहित्यकार सम्मेलन 29-30 दिसम्बर को तुलसी विहार, श्यामपुर ऋषिकेश (देहरादून) में होगा जिसमें देश के कई पत्रकार व समाचारपत्र पत्रिका संगठन व पत्रकार साहित्यकार भाग लेंगे। इसमें पत्रकारों, साहित्यकारों एवं विभूतियों को सम्मानित भी किया जायेगा।

### ज्ञान-प्रवाह में जेम्स प्रिंसेप स्मृति व्याख्यान

वाराणसी। सामनेघाट स्थित ज्ञान-प्रवाह में सिक्कों के माध्यम से काशी के इतिहास का वर्णन किया गया है। साथ ही पावर प्वाइंट प्रोजेक्टर से सिक्कों के सिलसिलेवार इतिहास की झलक भी दिखाई गई। जेम्स प्रिंसेप स्मृति व्याख्यानमाला के तहत यहाँ आए राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली के सह निदेशक डॉ० संजय गर्ग ने प्राचीन सिक्कों को आधार बनाकर काशी के इतिहास का उल्लेख किया। कहा कि शाहआलम द्वितीय के समय तो सिक्कों पर मुहम्मदाबाद के साथ ही बनारस भी अंकित हुआ करता था।

इसके पश्चात जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन हुआ तो उसने बनारस से जो सिक्के जारी किए उस पर त्रिशूल बना था जिससे ऐसे सिक्कों को त्रिशूली सिक्के के नाम से भी जाना गया है। उन्होंने कहा कि सिक्कों का इतिहास छठवीं शताब्दी से पूर्व आहत सिक्कों से माना जाता है। बताया कि काशी के सिक्के कोसल में भी मिले हैं इससे जाहिर होता है कि दोनों ही स्थानों के बीच काफी गहन सम्पर्क था। इस दौरान उन्होंने टकसाल अधिकारी के रूप में जेम्स प्रिंसेप के योगदान की भी चर्चा की। अध्यक्षता अभिलेखशास्त्री प्रो० किरणकुमार थपलयाल ने की। स्वागत श्रीमती विमला पोद्दार, संचालन प्रो० कमल गिरि व धन्यवाद ज्ञापन डॉ० नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने किया।

### कला को सामान्य जन तक पहुँचाने के जतन किये जायँ

वाराणसी। कला की भाषा सांकेतिकता की भाषा होती है। प्रतीक और अभिप्राय उसे समझने के सूत्र हैं। उनकी सम्यक व्याख्या होनी चाहिए और उन्हें सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयत्न भी किया जाना चाहिए।

ये विचार कलाविद् प्रो० राय आनंद कृष्ण ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से आयोजित दो दिवसीय कलातत्वकोश संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। मुख्य अतिथि कला इतिहासवेत्ता प्रो० केके थपलियाल ने कहा कि कला के अभिप्राय और प्रतीकों को साहित्य में उनकी व्याप्ति के साथ समझना आवश्यक है।

### अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी

भीलवाड़ा। बालसाहित्य में हम बच्चों की नवीनता नहीं दे पा रहे हैं। हमें अगर बालसाहित्य लिखना है तो बच्चों के मनोविज्ञान को समझना होगा। उन्हें आज के दौर के अनुसार कल्पना व आनंदलोक में उतारना होगा। बालसाहित्यकार किताबों के बीच नहीं, बल्कि समाज के बीच जाएँ। वे समाज के ठेकेदार नहीं बनें, याद रखें आगामी पीढ़ी अच्छी विचारक हो सकती है। उक्त विचार राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ० (श्रीमती) अजित गुप्ता ने अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह के समापन सत्र में व्यक्त किए। 'बालवाटिका' मासिक का दो दिवसीय 'अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह' स्थानीय सेठ गजाधर मानसिंहका धर्मशाला के सभागार में सम्पन्न हुआ।

### भयावह कथा-समय में संवाद

हिन्दी कथाकार और महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति विभूति नारायण राय ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के सौजन्य से श्री रामानंद सरस्वती पुस्तकालय, जोकहरा, आजमगढ़ में दो दिवसीय 11-12 अक्टूबर, 2008 'अखिल भारतीय कथा समारोह-कथा संवाद' का तीसरा ऐसा बड़ा आयोजन किया, जिससे कथा भूमि चौरस ही नहीं हुई है बल्कि कथा साहित्य में हस्तक्षेप की सार्थकता उजागर करते हुए कथा के यथार्थ के नए गवाक्ष भी खुले हैं।

प्रतिष्ठित समालोचक प्रो० नामवर सिंह ने

कथा समारोह के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करते हुए कहा कि कथा समीक्षा उतनी ही रोचक और रुचिकर होनी चाहिए कि कॉमन रीडर भी उसे पसन्द करे न कि क्लासरूम में पढ़ी जाने वाली समीक्षा। हर कथाकार उपन्यास और कहानी से अपनी अलग दुनिया बनाता है, यह दुनिया भाषाई कौशल से बनायी जाती है। उस दुनिया को वह किताबों के रूप में छोड़कर जाता है।

**विश्व कविता की एक मनोरम शाम**

नई दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर में 15 नवम्बर की शाम 'इण्डियन सोसायटी ऑफ आथर्स' के संयोजकत्व में श्री दिनेश मिश्र (भूतपूर्व निदेशक, भारतीय ज्ञानपीठ) के सौजन्य से कवि-आलोचक भारत भारद्वाज ने आधुनिक विश्व कविता के 15 शिखर कवियों की चुनी हुई कविताओं का पाठ किया। इन कवियों में मायकोवस्की, मारीना त्स्वेतायेवा, ब्रर्तोल्त ब्रेख्त, लोर्का, मारिया रिल्के, होचीमिन्ह, नाजिम हिकमत, महमूद दरवेश, पाब्लो नेरुदा, शिम्बोर्स्का, येदूरा अमिख़ाई रावर्टो फर्नांडिस रेतामार, अमेरिकी नीग्रो कवि लैंग्स्टन ह्यूज थे।

भारत भारद्वाज ने बताया कि आधुनिक विश्व कविता के केन्द्र में बची हुई मनुष्यता को बचाने की चिन्ता ही नहीं है, पूँजीवादी साम्राज्यवाद के आतंक से मुक्ति की आकांक्षा भी है। इजरायल, वियतनाम, फिलीस्तीन, तुर्की, क्यूबा ऐसे देश हैं, जहाँ के निर्वासित कवियों ने अपने देश की लड़ाई ही नहीं लड़ी है बल्कि अपनी आजादी की लड़ाई के साथ मानव-मुक्ति का पथ भी प्रशस्त किया है। उन्होंने कहा कि हिन्दी कविता का भूगोल ही बड़ा नहीं है, उसका आकाश भी बड़ा है।


**अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं**

के लिए

**साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह**

**तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम**

**विश्वविद्यालय प्रकाशन**

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
**वाराणसी** - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com


**पं० हंसकुमार तिवारी स्मृति समारोह का आयोजन**

हिन्दी के सुख्यात कवि, आलोचक, निबन्धकार एवं बांगला के मूर्धन्य विद्वान पं० हंसकुमार तिवारी की 21वीं पुण्यतिथि पर दिनांक 27 सितम्बर 2008 को एक स्मृति समारोह का आयोजन निहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से पटना स्थित साहित्य सम्मेलन के सभागार में किया गया। समारोह की अध्यक्षता साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० जगदीश पाण्डेय ने की।

विद्वान् वक्ताओं ने इस अवसर पर पं० हंसकुमार तिवारी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विस्तार से चर्चा की। तिवारी द्वारा बंगला की मौलिक कृतियों का हिन्दी में किये गये अनुवाद-साहित्य की संख्या एक सौ से ज्यादा है। बंगला के लेखक और विद्वान आज भी तिवारीजी को अत्यन्त श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं।

इस अवसर पर हिन्दी के अध्येताओं और शोधकर्ताओं को उपयोग हेतु पं० हंसकुमार तिवारी सांस्कृतिक परिषद, पटना की ओर से श्री विश्वनाथ पाण्डेय ने तिवारीजी के ग्यारह मौलिक ग्रन्थों का एक सेट स्थानीय सिन्हा लाइब्रेरी के पुस्तकालयाध्यक्ष, डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह को भेंट स्वरूप प्रदान किया।

**कला**

**हंसकुमार तिवारी**

तृतीय संस्करण : 1999

पृष्ठ : 160

सजिल्द: रु० 150.00


ISBN: 81-7124-233-2

*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी


'कला' का तीसरा संस्करण आपके सामने है। हंसकुमार तिवारी ने पहले कविता लिखी या पहले गद्य लिखा, यह बताना तो मुश्किल है लेकिन इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि साहित्य संसार में उनका प्रवेश इस शोध-समीक्षात्मक पुस्तक 'कला' के प्रकाशन से हुआ। 'कला' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, वर्ष सन् 1938-39 में प्रसिद्ध उपन्यासकार स्व० अनूपलाल मण्डल के सौजन्य से भागलपुर स्थिति उनकी प्रकाशन संस्था युगान्तर साहित्य मन्दिर से हुआ था। साहित्य जगत में कला पर उन दिनों गम्भीर चर्चा चल रही थी—साहित्य मनीषियों के विचार पत्र-पत्रिकाओं में आ रहे थे। लगता है इसी से प्रेरणा पाकर तिवारीजी ने इस गम्भीर विषय पर अपनी लेखनी चलायी और इस विषय पर पहली पुस्तक का प्रणयन तथा प्रकाशन हुआ।

# पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' हमें प्राप्त हो रहा है, इसके लिए धन्यवाद। अपनी संक्षिप्तता में भी यह पत्र पर्याप्त ज्ञानवर्धक है।

'मालवीय भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' में एक पुस्तकालय/वाचनालय भी है; यह पत्र वहाँ स्थापित कर दिया जाता है जिससे अन्य पाठक भी लाभान्वित हों।

**— प्रो० विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'**,
मा० निदेशक, मालवीय भवन, बीएचयू, वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त हुआ। पत्रिका से भाषा सम्बन्धी विविध जानकारियाँ मिल रही हैं। इस प्रकार की कम पत्रिकाएँ ही चलन में रह गई हैं। आपका प्रयास सराहनीय है। आप पत्रिका में हिन्दी व अन्य विषयों के लेखों को और अधिक स्थान देने का प्रयास करें।

**— अशोक गिरि**, कोटद्वार (उत्तराखण्ड)

प्रतिभा और स्नेह के समवाय हम सभी के परम सम्मान्य स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी से अन्यून क्षमता के साथ 'भारतीय वाङ्मय' का आप सम्पादन कर रहे हैं। इसके लिए आपको बधाई। उनसे तो प्रत्यक्ष परिचय था, आप भी अपने समर्थ लेखन से परिचित होते जा रहे हैं। इसके अंक 9-11 के पृष्ठ 3 पर श्री गगनेन्द्र केडिया का लेख 'शुद्ध हिन्दी लिखें' छपा है, जो अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण और प्रेरक है।

**— डॉ० रहसबिहारी द्विवेदी**, जबलपुर

पुस्तकालय के सदस्यगण आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' नियमित पढ़ा करते हैं। पत्रिका रुचिकर, प्रेरणादायक, पठनीय एवं संग्रहणीय है।— **सर्व हितैषी पुस्तकालय**, नालन्दा

**भारतेन्दु का एक अंग्रेज से विदग्ध वार्तालाप**

भारतेन्दु ने जब ट्रेन से जनकपुर (नेपाल) की यात्रा की तो सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में उनका सहयात्री एक अंग्रेज था। गाड़ी शायद तिरहुत क्षेत्र से जा रही थी। पानी बरसने लगा तो कुछ बौछारें भीतर आईं। साहब की नींद खुली तो उसने पूछ लिया—''हैव यू मेड वाटर?'' भारतेन्दु ने उत्तर दिया—''नाट आई, बट गॉड।'' यात्रा का एक अल्प प्रसंग। डिब्बे में साहब और भारतेन्दु के अतिरिक्त एक सम्पन्न रईस बैठे थे। साहब ने पूछा, ''यह कौन है?'' उत्तर में हरिश्चन्द्र ने कहा—''ही इज ए रिच मैन, हिज फोर-फादर्स वेअर वेरी रिच बैंकर्स ऑफ माई सिटी''। चुहल पर उतारू अंग्रेज ने फोर फादर्स (Fore fathers) का अर्थ निकाला—Four Fathers और पूछा—''आल दि फोर फादर्स?'' इस पर भारतेन्दु ने अट्टहास किया।

'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' पुस्तक से

## प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

**भाषा भारती के सजग प्रहरी : नृपेन्द्रनाथ गुप्त :** प्रधान सम्पादक : डॉ० प्रभुनारायण विद्यार्थी, सम्पादक : डॉ० रमेश नीलकमल नृपेन्द्रनाथ गुप्त अमृत महोत्सव समिति, पटना द्वारा प्रस्तुत—प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन, एम बी-32/2 बी, शकरपुर, दिल्ली-110 092, प्रथम संस्करण, मूल्य : रु० 600.00 मात्र

'भाषा भारती संवाद' नामक त्रैमासिक पत्रिका के संस्थापक, संपादक श्री नृपेन्द्रनाथ गुप्त के 75वें जन्म वर्ष में आयोजित अमृत-महोत्सव के अवसर पर प्रस्तुत अमृत-अभिनंदन ग्रन्थ है—भाषा भारती के सजग प्रहरी : नृपेन्द्रनाथ गुप्त। बिहार सरकार के राजपत्रित अधिकारी के रूप कार्यरत श्री गुप्त सेवा-निवृत्त होने के बाद पूरी तरह हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति समर्पित हो गये। उन्होंने विभिन्न हिन्दी-संस्थानों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं एवं विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की पत्रिकाओं के सम्पादन और भाषा-भारती-संवाद के अलावा 'न्यूज़ बुलेटिन' आदि का सम्पादन करते हुए सतत हिन्दी भाषा की गौरवमयी परम्परा की श्रीवृद्धि में योगदान दिया है। प्रस्तुत ग्रन्थ एक ओर जहाँ श्री गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित करता है वहीं आजादी के पहले से अब तक बिहार प्रदेश में हिन्दी भाषा के संघर्ष, संस्थापन और विकास का इतिवृत्त भी प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ पठनीय है।

**खरी-खरी** (काव्य संग्रह) : कवि : देवेन्द्र कुमार मिश्रा, प्रकाशक : स्वाति अकादमी, बी-5/263 यमुना विहार, दिल्ली-110 053, मूल्य : रु० 100.00 मात्र

सार्थक कविता अपना वक्तव्य आप होती है, उसके बारे में कुछ कहा नहीं जाता, व्याख्या की अपेक्षा नहीं होती, ऐसी कविता पाठक या श्रोता के मनो-मस्तिष्क में सीधे सम्प्रेषित हो जाती है। कविता के इस गुण से लबरेज़ हैं खरी-खरी कविताएँ। छोटी, सरल, सहज ये कविताएँ सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं, शोषण, अन्याय और मानवीय मूल्यों के क्षरण की कविताएँ हैं। अपने इतिहास, वर्तमान और भविष्य के बारे में कवि की यह टिप्पणी—''छल-कपट, अपहरण, व्यभिचार / हत्या-मारकाट से भरे इतिहास / इनको क्या पढ़ें, क्या सीखें / बलवाग्रस्त, बेकार, अश्लील, फूहड़ वर्तमान / महँगाई, अपराध, लाचारी, भय से पीड़ित वर्तमान / कमजोर नींव पर मजबूत मकान की कल्पना / कोरी कल्पना ही है....!''

**काजुको शिराइशी की कविताएँ** (अंग्रेजी से अनुवाद) : सुरेश सलिल, प्रकाशक : **तनाव** (साहित्य की पत्रिका - 107) सत्तावन, मंगलवारा, पिपरिया-461 775 (मध्यप्रदेश), मूल्य : एक प्रति दस रुपये मात्र।

'तनाव'-107 के अंक में जापानी भाषा की शीर्षस्थ कवियित्री—'काजुको शिराइशी' की कविताओं का सुरेश सलिल द्वारा किया गया अनुवाद प्रस्तुत है। आज की महानगरीय संस्कृति के उच्छिष्ट पर उफनती हुई तीखी प्रतिक्रिया हैं ये कविताएँ। यद्यपि 'एंग्री-यंग-मैन' और 'बीटनिक्स' मानसिकता के बीच काजुको की कविताएँ लिखी गयी हैं किन्तु संवेदना और सहजता के धरातल पर उनकी अलग पहचान है। अपनी कविता 'पीली रात' में भारत में हुई भोपाल गैस त्रासदी पर उनके उद्‌गार हैं—''भोपाल, हिरोशिमा है भारत का / फौजी जंग का शिकार नहीं / शिकार आदमी आदमी के बीच छिड़ी / एक भीतरी जंग का.....!'' हिन्दी भाषा में प्रस्तुत काजुको शिराइशी का यह काव्य-परिचय पठनीय एवं संग्रहणीय है।

'भारतीय वाङ्मय' नवम्बर 08 का अंक प्राप्त हुआ। विभिन्न सारगर्भित सामग्री के साथ 'शुद्ध हिन्दी लिखें' शीर्षक अच्छा लगा। सम्मान पुरस्कार 'प्रो० युगलकिशोर मिश्र का अभिनन्दन' बहुत ही रोचक लगा। ऐसे ही वृहद ज्ञान लेकर यह उपलब्ध होता रहे, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। **— डॉ० रामसुमेर यादव**, लखनऊ


# भारतीय वाङ्मय

**मासिक**

**वर्ष : 9** **दिसम्बर 2008** **अंक : 12**

*संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक*

**स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी**

*संपादक :* **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

**अनुरागकुमार मोदी**

*द्वारा*

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

*के लिए प्रकाशित*

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

**डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003** RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001


सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)


☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**



## विश्वविद्यालय प्रकाशन

**प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता**

***( विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह )***

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

## VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

*Premier Publisher & Bookseller*

**(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)**

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)